AL HASANAT
BOOKS PVT. LTD.
नबियों के हालात
मुहम्मद अब्दुल हई (रह०)

नबियों के हालात

लेखक

अबू सलीम मुहम्मद अब्दुल हई (रह० अलैह)

मकतबा अल हसनात, (देहली)

क्या और कहाँ ?

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम

एक समय था कि पृथ्वी पर मानव जाति निवास नहीं करती थी।अल्लाह की इच्छा हुई कि वह पृथ्वी पर मानव जाति को बसाए अल्लाह ने सब से प्रथम मनुष्य को अपनी माया शक्ति से जन्म दिया। उन्हें मिट्टी से बनाया गया था उनका नाम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम है। हम–तुम–सब उन की संतान हैं।

मानव से पूर्व अल्लाह ने जिन्न और फ़रिश्तों (ईश्वर का वह दूत जो उसकी आज्ञा के अनुसार काम करता है) को जन्म दिया था। उसने हज़रत आदम (अलै0) को जब जन्म देना चाहा तो फ़रिश्तों से कहा कि हम "इन्हें पृथ्वी पर अपना उत्तराधिकारी बनाकर भेजेंगें"। तुम समझे उत्तराधिकारी किसे कहते हैं ? मान लो तुम्हारे पास कोई सम्पत्ति है। अब तुम यदि किसी को अपनी सम्पत्ति का प्रबन्ध करने के लिए भेजो और उसे कुछ आवश्यक बातें भी बतादो कि इस सम्पत्ति का प्रबंध कैसे करे, तो वह तुम्हारा उत्तराधिकारी होगा। यही अर्थ है पृथ्वी पर मानव को उत्तराधिकारी बनाने का। यह पृथ्वी अल्लाह की है। यहाँ कुछ् कार्य करने के लिए मानव को अल्लाह ने भेजा है। कार्य करने के लिए उसको आवश्यक बातें बता दी हैं। अब उसे यहाँ जो कार्य करना चाहिए वह अल्लाह की इच्छा से करना चाहिए। जो लोग ऐसा करते हैं वही उत्तराधिकारी होने का अधिकार रखते हैं।

हां तो जब अल्लाह ने फ़रिश्तों से कहा कि वह पृथ्वी पर मनुष्य को अपना उत्तराधिकारी बना कर भेजना चाहता है तो वह बोले,"हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह मनुष्य पृथ्वी पर जाकर उपद्रव मचाएगा और रक्त बहाएगा। हम तो तेरा गुण गाते हैं और तेरी वंदना में लगे रहते हैं।"

अल्लाह ने कहा– "मैं जो ज्ञान रखता हूँ वह तुम नहीं रखते हो। तुम्हें क्या पता कि मनुष्य में हम ने क्या–क्या विशेषताएँ रखी हैं। यह जब पृथ्वी पर जाएगा तो हमारी दी हुई बुद्धि से धरती के छूपे हुए कोष का पता चलाएगा। हमारी उत्पादित वस्तुओं का उपभोग करेगा –ज़रा तुम तो बताओ क्या तुम भी इन वसतुओं के बारे में कुछ ज्ञान रखते हो ?"

फ़रीश्ते भला इन बातों को क्या जानते थे। वह बोले " ऐ मालिक ! हमें तो कोई ज्ञान नहीं। हमें तो केवल इतना ही ज्ञान है जितना कि तूनें हमें दिया है। तू ही सबसे अधिक ज्ञान और विद्या रखने वाला है।"

फिर अल्लाह ने हज़रत आदम(अलै0)से कहा कि "अच्छा अब तुम बताओ" हज़रत आदम (अलै0)को अल्लाह ने पहले ही ऐसी बुद्धि दी थी जिससे उन्हें पृथ्वी की सारी वस्तुओं का ज्ञान हो गया था। उन्होंने इन सब बातों को बता दिया तब अल्लाह ने फ़रिश्तों से कहा कि " देखा तुमने ! हमने तुम से कह दिया था कि हम धरती और आकाश की सारी वस्तुओं को जानते हैं– चाहे वह खुली हों या छुपी।"

अब अल्लाह ने फ़रिश्तों को आज्ञा दी कि वह सब हज़रत आदम को बड़ा जान कर उनको सज्दा (माथा टेकना) करें। उस समय शैतान भी वहाँ उपस्थित था। अल्लाह की आज्ञा सुनकर सारे फ़रिश्ते सज्दे में गिर गए। लेकिन शैतान ने सज्दा न किया। वह अकड़ गया, बोला "मै इस मिट्टी से बने हुए मनुष्य को सज्दा करने से रहा मैं इससे अच्छा हूँ। मैं आग (अग्नि) से बना हुआ हूँ।" शैतान का यह अहंकार अल्लाह को अच्छा न लगा। अल्लाह ने उसको अपने राज सभा (दरबार) से निकाल दिया वह अपमानित हो गया। क़यामत (वह अंतिम दिन जब सभी मुर्दे उठ खड़े होंगे और ईश्वर के सम्मुख उनके कर्मो का लेखा जोखा प्रस्तुत होगा) तक उस पर धिक्कार ही पड़ती रहेगी।

क़यामत के दिन वह और उसका कहा न मानने वाले सब लोग अपमानित हो कर नरक में डाले जाएँगे।

अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (अलै0) के साथ रहने के लिए उनकी पत्नि को भी जन्म दिया। उनका नाम "हव्वा" है। हज़रत हव्वा तमाम मनुष्यों की माता हैं अब अल्लाह ने हज़रत आदम (अलै0) और हव्वा को स्वर्ग में रहने के लिए भेज दिया। स्वर्ग में बड़े अच्छे-अच्छे फल थे। खाने-पीने की स्वादिष्ट वस्तुएँ थीं। हर प्रकार का सुख था, अल्लाह ने उनसे कहा मेरे इस स्वॅग में रहो और जो इच्छा हो जी भर कर खाओ पियो। लेकिन देखो उस वृक्ष के निकट मत जाना यह तुम्हारे काम का नहीं है दोनो प्रसन्नता के साथ स्वर्ग में रहने लगे।

शैतान को अपने निकाले जाने का अत्यन्त दुख हुआ। उसे चाहिए तो यह था कि वह अपनी भूल को मान लेता और अपने मालिक के सम्मुख पश्चाताप करके अपने अपराध की क्षमा मँगता मगर वह क्रोध और अहंकार में आकर और भी अकड़ गया। उसके हृदय में यह बात बैठ गई कि उसको आदम और हव्वा ने अपमानित कराया है इसलिए उसने उनसे प्रतिशोध की ठानी। उसे यह पता तो था ही कि अल्लाह ने आदम और हव्वा को एक वृक्ष के निकट जाने पर प्रतिबंध लगा दिया है। बस एक दिन वह भोला भाला रूप बनाकर उन्हें बहकाने के लिए पहुँच गया। उनसे बोला," तुम्हें कुछ पता भी है, अल्लाह ने तुम्हें स्वर्ग में सब कुछ दे रखा है परन्तु उस वृक्ष के निकट जाने से क्यों रोक दिया है ? बात यह है कि यह वृक्ष बहुत ही अच्छा वृक्ष है। इसका फल यदि कोई खाले तो उसे कभी मृत्यु नही आएगी और वह ऐसा हो जाएगा मानो फ़रिश्ता।" शैतान ने सौगंध खाकर उनसे कहा " मैं तो तुम्हारा मित्र हूँ, तुम्हारा भला ही चाहता हूँ इसी लिए तुम्हें यह सब बातें बता रहा हूँ।"

उन दोनों को क्या पता था कि यह भोला भाला रूप रखने वाला जो उनका मित्र बना हुआ है उनका शत्रु है। वे बेचारे उसके छल में आगए और उसके कहने से एक दिन उस वृक्ष का फल खा बैठे। उस फल का खाना था कि उनके शरीर पर जो स्वर्ग का वस्त्र था वह सब उतर गया और वह नग्न हो गए। बेचारों ने वृक्षों के पत्तों से अपना शरीर छुपाया। और उन्हें पता चला कि उनसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। उनका मालिक उनसे अप्रसन्न हो गया है।

यह सोचते ही उन्होंने अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाना और प्रार्थना शरू कर दी। उससे अपनी भूल की क्षमा माँगी ! वह शैतान के समान अकड़े नहीं। अल्लाह को उनकी यह बात भली मालूम हुई। उसने उन्हें क्षमा कर दिया और उन्हें समझा दिया कि देखो यह शैतान तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है। इसकी बातों में अब न आना।

अब अल्लाह तआला ने उन दोनें को पृथ्वी पर भेज दिया और आज्ञा दी कि जाओ कुछ दिनों तक वहीं रहो और अच्छे–अच्छे कार्य करो, ऐसे कार्य जिनसे मैं प्रसन्न रहूँ, अल्लाह ने उनको वह सब बातें सिखा दीं जो उसकी खुशी की थीं। हज़रत आदम(अलै0) अल्लाह के सबसे पहले नबी (ईश्वर का दूत) थे।

अल्लाह ने यह भी समझा दिया कि तुम में से जो काई अच्छे कार्य करेगा और संसार में ऐसे रहेगा जैसे उसके उत्तराधिकारी को रहना चाहिए तो वह मृत्यु के बाद जब हमारे पास आएगा तो हम उसे फिर स्वर्ग में भेज देगें और जो कोई हमारे बताए हुए मार्ग पर नही चलेगा वह शैतान का साथी होगा और उसको उस के साथ ही नरक जाना पड़ेगा।

याद रखने की बातें

1- मनुष्य सदैव से मनुष्य ही है, हज़रत आदम (अलै0) की संतान। जो लोग यह कहते है कि मनुष्य के बाप-दादा बंदर या लंगूर जैसे पशु थे वह उचित नहीं कहते। यह बेचारे भ्रम में पड़ गए हैं। उनके सम्मुख अल्लाह का उतारा हुआ ज्ञान का प्रकाश नही है।

2- भूल किस से नही होती। भूल हो जाने के बाद क्षमा मांगना और पश्चाताप करना मानव का काम है ऐसे लोग अल्लाह को प्रिय होते हैं। परन्तु अपराध करके अकड़ना और भूल की क्षमा न मांगना शैतान का काम है। ऐसे लोग शैतान के साथ नरक में डाले जाएंगे।

3- पृथ्वी पर बसने वाला सब से पहला मनुष्य अल्लाह का नबी था। अल्लाह ने मनुष्य के खान-पान और निवास के लिए तो प्रबंध किया ही है, लेकिन उसको उचित मार्ग दिखाने का प्रबंध भी आरंभ से ही किया है।

4- मनुष्य पृथ्वी पर अल्लाह का उत्तराधिकारी है। उसका कर्त्तव्य यह है कि वह पृथ्वी पर अल्लाह की नेमतों से उसकी इच्छानुसार काम ले। वह यहाँ किसी वस्तु का मालिक या अधिकारी नहीं है कि वह यहाँ अपनी आज्ञा चलाए। शासन अल्लाह का है। आदेश और इच्छा भी उसी की होनी चाहिए।

5- जो व्यक्ति अल्लाह के आदेश पर चलते हैं वह उसके शिष्ट भक्त हैं। आख़िरत (हिसाब-किताब के बाद का जीवन) में उनके लिए स्वर्ग है। जो अल्लाह को नहीं पहचानते और उत्तराधिकारी होने का कर्त्तव्य पूरा नहीं करते वह उस मालिक को अप्रसन्न करते हैं, आख़िरत में ऐसे लोग नरक में डाले जाएँगे।

हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम)

हज़रत आदम (अलै0) और हज़रत हव्वा बहुत दिनों तक संसार में रहते रहे, उनकी संतान बहुत बढ़ी जो इधर-उधर फैल गई। ये लोग दूर-दूर के देशों में जाकर रहने लगे। कुछ समय तक उनको वह बातें याद रहीं जो उनको उनके दादा हज़रत आदम (अलै0) ने बतायी थीं।

बहुत समय तक ये इसी प्रकार रहते रहे और दूर-दूर उनकी बहुत-सी बस्तियाँ बस गयीं । जैसे-जैसे समय बीतता गया यह अच्छी बातों को भूलते गए, जिसकी हजरत आदम (अलै0) ने उन्हें शिक्षा दी थी। उन्होंने अपने पूर्वजों की मूर्तियाँ बनालीं। खुदा को भूलने लगे मूर्ति पूजने लगे, जहाँ किसी वस्तु से भय अनुभव हुआ या उसमें कोई अपना हित दिखाई दिया, उन्होंने उसे पूजना आरम्भ कर दिया।

उनकी यह बुरी दशा देखकर उनके सच्चे मालिक ने उनको अच्छी बातें बताने के लिए अपने एक शिष्ट भक्त हज़रत नूह (अलै0)को फिर अपना रसूल बनाकर भेजा।

आप जानते हैं रसूल किसे कहते हैं ?

अल्लाह अपने भक्तों को अपने आदेश पहुंचाने और अपनी इच्छा बताने के लिए किसी शिष्ट व्यक्ति का चुनाव कर लेता है। यह अल्लाह की बताई हुई बातें सभी लोगें को बताते हैं और उन्हें अल्लाह के मार्ग पर चलना सिखाते हैं। ऐसे शिष्ट

व्यक्ति रसूल कहलाते हैं। यह रसूल हर देश में आए और हर क़ौम, जाति को अल्लाह की बातें इन्हीं रसूलों ने बताई हैं।

हज़रत नूह (अलै0) ने अपनी कौम को भलाई की ओर बुलाया। बूरे कार्य करने से मना कर दिया। यह लोग जिन झूठे खुदाओं और मूर्तियों की पूजा करने लगे थे, उन्हें उनकी पूजा से रोका। उन्होंने कहा-"बन्धुओं! आज्ञाकारी बनो केवल अल्लाह के, उसी की पूजा करो, वही तुम्हारा खुदा है, मेरा कहा मानो और अल्लाह के सिवाय सारे खुदाओं से मुँह मोड़ लो। यदि तुम ऐसा करोगे तो अल्लाह तुम्हारी भूल को क्षमा कर देगा, तुम्हें संसार में सम्मान मिलेगा। आख़िरत में स्वर्ग देगा।

तुम जानो जब कोई अल्लाह को अपना मालिक बनाएगा और उसके आदेशों पर चलेगा तो फिर अपनी मनमानी नहीं कर सकता। दूसरों की संपत्ति हड़प नहीं कर सकता। उसे यह खुली छूट नहीं मिल सकती कि जो चाहे करता फिरे। उसे तो भले मनुष्य के समान रहना पड़ेगा। दूसरों की सेवा करनी होगी। कभी अपना हित छोड़ना होगा। और कभी सत्यता और न्याय के लिए अपनी जान जोखिम में डालनी पड़ेगी।

यह बातें ऐसे व्यक्ति के वश की नहीं जो अपने हित और सुख को ही चाहता हो, कुछ ऐसी ही दशा हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कौम की भी हो गई थी। वह इतने अधिक बिगड़ चुके थे कि किसी प्रकार ठीक ही नहीं होते थे। हज़रत नूह (अलै0) जब उन्हें अच्छी बातें सुनाते तो वह कानों में ऊंगलियां ठूंस लेते। जब वह उन्हें अल्लाह के इच्छानुसार काम करने को बुलाते तो

वह दूर-दूर भागते। बढ़-बढ़ कर बातें बनाते हज़रत नूह ने उन्हें हर प्रकार से समझाने की चेष्टा की। उनकी सभाओं और बाज़ारों में खुल कर अल्लाह का संदेश पहुँचाया। उनके घरों में जाकर एकांत में बात समझाने की चेष्टा की। उन्हें बार-बार यही याद दिलाया कि देखो जिसने तुम्हें जन्म दिया और जो तुम्हारा पालन-पोषण कर रहा है उसका विरोध मत करो। उससे अपनी भूल की क्षमा माँगो। उसकी ओर पलट आओ। देखो वह तो बड़ा दयालु है वर्षा वही करता है, माल और संतान उसी ने दी है। नदी उसी ने बहाई है। खेती और बाग (वाटिका) उसी ने उगाए हैं, यह तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ऐसे मालिक से मुँह मोड़ते हो ? उसी ने तुम को समझ-बूझ दी है। कैसा अच्छा मनुष्य बनाया है। यह आकाश धरती, यह सूर्य यह चन्द्रमा यह तारे आख़िर किसने बनाये ? सूर्य को गर्मी और चन्द्रमा को प्रकाश किसने दिया ? धरती से पौधे किसने उगाए ? इस धरती पर तुम चलते-फिरते हो, घर बनाकर रहते हो और उसी मालिक की दी हुई वस्तुओं से लाभ उठाते हो।

फिर यह भी तो सोचो कि तुम्हें मरना भी है। इस संसार में सदा रहना तो नहीं है मृत्यु के बाद तुम उसी के पास जाओगे। अपने किए गए कर्मो का बदला पाओगे, फिर ऐसे अच्छे मालिक का कहा मानने से तुम क्यों भागते हो ? उससे भाग कर कहीं जा भी नहीं सकते, अंत में मरना ही है। लौट कर उसी के पास जाना है।

हज़रत नूह (अलै0) की क़ौम ने उनकी कोई बात न सुनी। उन्होंने उन का कहा न माना। वह उन्हीं लोगों का कहा

मानते रहे जो क़ौम के बड़े थे और जिन्हें अपनी धन-दौलत और संतान पर अभिमान था। यह लोग हज़रत नूह (अलै0) के विरोध में छुप-छुप कर उपाय सोचने लगे।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम के लोगों को साढे नौ सौ साल तक समझाते रहे, समझाते रहे परन्तु गिनती के कुछ लोगों को छोड़कर किसी ने उनका कहना न माना। यहाँ तक कि उनके पुत्र ने भी उनकी बात न सुनी। वह काफ़िरों (अल्लाह का इन्कार करने वाला) के संग ही रहा। जो लोग अल्लाह के रसूलों का कहना नहीं मानते हैं वह काफ़िर कहलाते हैं। यह काफ़िर हज़रत नूह (अलै0) के शत्रु हो गए। इस शत्रुता में वही लोग आमे-आगे थे जो अपनी क़ौम के सरदार (मुखिया) थे, धनवान थे। यह लोग हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की बातों को हंसी में उड़ाया करते थे और कहते थे कि उनकी बातें कुछ छिछोरे लोगों के सिवाय और किसने मानी है ? बड़े लोगें में से तो कोई भी उनका साथी नही है। इन कमीनों (ओछे) और नीच जाति के लोगों को तो अपने निकट बैठना भी नहीं चाहिए।

हज़रत नूह (अलै0) इन बातों को सुनते रहे और सहन करते रहे। वह अपनी धुन के पक्के थे। वह जो कुछ कर रहे थे अपने मालिक को प्रसन्न करने के लिए कर रहे थे। वह जानते थे कि उनका मालिक सब ज्ञान रखता है। अत: उन्होंने साहस नहीं छोड़ा। और अपने काम में लगे रहे।

बुराई सदैव नहीं फूलती-फलती। अल्लाह तआला अपने अनुयायिओं को उस समय तक छूट देता है जब तक उनके

सुधार की कुछ भी सम्भावना होती है उसके बाद फिर संसार से उनका अंत कर दिया जाता है।

हज़रत नूह (अलै0) की कौम ने जब अपने नबी की बात को बिल्कुल ही अस्वीकार कर दिया तो अल्लाह ने उस क़ौम को संसार से मिटा देने का निर्णय किया। और हज़रत नूह (अलै0) को बता दिया गया कि अब शीघ्र ही उन की क़ौम पर अल्लाह का अजा़ब (दण्ड) आएगा। हज़रत नूह (अलै0) को आदेश दिया गया कि वह एक बड़ी सी कश्ति बनाएँ। इतनी बड़ी नाव कि उसमें सारे मुसलमान आ जाएँ और इस देश में जितने पशु रहते थे उनका भी एक-एक जोड़ा उसमें रख लिया जाय। हज़रत नूह (अलै0) ने नाव को बनाना शरू किया। लोगों ने देखा कि जहाँ न कोई समुद्र है और न कोई नदी, वहाँ हज़रत नूह (अलै0) बैठे नाव बना रहे हैं।

अब उन्होने और भी हंसी उड़ानी शुरू की। बोले–"बड़े मियां को देखो खुश्की (स्थल) में नाव चलाएँगें।" हज़रत नूह जानते थे कि बात क्या है। आप ने फ़रमाया–"हंसो नहीं, बहुत जल्द तुम्हें पता चल जाएगा कि मामला क्या है, उस समय हम तुम पर हंसते होंगे।"

अब वह दिन आ गया जब इन काफ़िरों पर अल्लाह का अज़ाब आना था। धरती से चश्मे (पानी के सोते) फूट पड़े। पहली बार एक तनूर (आग का चूल्हा) में पानी निकलता हुआ देखा गया। इधर आकाश से मुसलाधार वर्षा होने लगी। इतनी वर्षा हुई कि सब जल–थल हो गया। नदियों में बाढ़ आ गई। और

देखते--देखते सब कुछ डूबने लगा। हज़रत नूह (अलै0) और उनके साथी पहले ही अपनी कश्ति में बैठ गए। नाव पानी पर तैरने लगी और सारी बस्ती डूबने लगी। हज़रत नूह (अलै0) का पुत्र काफ़िरों का साथी था।

आप ने अंतिम बार उसे समझाया और कहा, 'देखो बेटा ! इन अत्याचारियों का साथ छोड़ दो, अल्लाह का आदेश मान लो और हमारी कश्ति में आ जाओ।''

उसने एक न सुनी और बोला, " मैं पर्वत पर चढ़ जाऊँगा और पानी से बच जाऊँगा और हज़रत नूह (अलै0) ने कहा, 'देखो आज डूबने से कोई नहीं बचेगा। बस वही बचेगा जिस पर मेरा मालिक कृपा करेगा।''

अभी हज़रत नूह (अलै0) उसे समझा ही रहे थे कि पानी की एक ऊँची सी लहर उठी और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का बेटा डूबने वालों के साथ डूब गया। सब डूब गए। हज़रत नूह (अलै0) ने अल्लाह से बिनती की कि 'ऐ मालिक ! मेरा पुत्र भी डूब गया। तूने मूझे वचन दिया था कि तू मेरे घर वालों को बचा लेगा और यह तो मेरा बेटा था।'' अल्लाह ने कहा–" नही वह तेरे घर वालों में से नहीं रहा था। वह अच्छे कार्य नहीं करता था। वह तो काफ़िरों का साथी था। जब तुम इतनी –सी–बात भी नहीं जानते तो फिर हम से क्या प्रार्थना करते हो?"

बात हज़रत नूह (अलै0) की समझ में आ गई। आपने अल्लाह से क्षमा माँगी और समझ लिया कि जो जैसे करतूत

करेगा वैसा ही फल मिलेगा, चाहे वह नबी का पुत्र ही क्यों न हो। नाव में बैठे हुए अल्लाह के बंदो (भक्तों) के सिवाय कोई न बचा। अब पानी उतरना शूरू हुआ ! धरती का पानी घटने लगा। और हज़रत नूह की कश्ति पहाड़ पर जिसका नाम "जूदी" था, आकर रूक गई। अल्लाह के शिष्ट भक्त और अल्लाह के रसूल नाव से बाहर आए और संसार में अल्लाह की कृपा से रहने–बसने लगे। बुराई मिट गई और भलाई फूलने–फलने लगी। अल्लाह की धरती पर अल्लाह के शिष्ट भक्तों का बोलबाला हुआ और वही व्यक्ति जिनको संसार नीच और कमीना कहती थी पृथ्वी के मालिक बना दिये गए।

याद रखने की बातें

1- बुराई करते–करते मानव इतना बुरा हो जाता है कि फिर भली बातें उसे अच्छी नही लगतीं।

2- लोगों को भली बातों की ओर बुलाना कोई सरल कार्य नहीं। इस कार्य में मनुष्य को कष्ट भी उठाना पड़ता है।

3- अल्लाह के शिष्ट भक्त जब दूसरे मनुष्यों को भलाई का मार्ग दिखाते हैं तो वह यह नहीं सोचते कि उनकी बात कोई सुनता है या नहीं, वह अपना काम करते रहते हैं। हज़रत नूह (अलै0) साढ़े नौ सौ साल तक यही कार्य करते रहे।

4- अल्लाह तआला अपने बन्दों को जब तक चाहता है, अवसर देता रहता है। जब तक उनके सुधरने की कुछ भी आशा होती है। परन्तु जब वह अल्लाह की बंदगी स्वीकार नहीं करते

तो फिर ऐसे लोगों पर अज़ाब आता है और अल्लाह उन्हें मिटा देता है। पृथ्वी इन बुरे लोगों से पवित्र कर दी जाती है।

5- हर व्यक्ति जैसा कार्य करता है वैसा ही हो जाता है बाप–दादा की भलाई और बुज़ुर्गी(बड़प्पन) कुछ काम नहीं आती।

हज़रत हूद

अलैहिस्सलाम

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बाद अल्लाह ने एक और क़ौम को शक्ति और धन प्रदान किया। इस क़ौम का नाम "आद" था। इस क़ौम के लोग बड़े बलवान थे। और उन्हें अपने बल पर बड़ा घमंड था। उनके यहाँ बड़े–बड़े बाग़ (वाटिका) थे। यह ऊँचे–ऊँचे भवन बनाते थे। और बड़े ठाठ से रहते थे। उनको अपने ठाठ– बाट पर इतना घमंड हो गया था कि यह शक्तिहीन और निर्धन व्यक्तियों पर अत्याचार करने लगे थे। धन–दौलत के नशे में खुदा को भूल गए थे। सैंकड़ों देवियों और देवताओं की पूजा करते थे। उनके धनी और ऊँचे लोगों ने बड़ा उद्‌धम मचा रखा था । विशाल भवन बनाते और उनमें इस प्रकार रहते जैसे उनको कभी मृत्यु नहीं आएगी।

आद की क़ौम में जब बिगाड़ बहुत बढ़ गया और उन्होंने अल्लाह की बताई हुई बातों को बिल्कुल ही भुला दिया तो अल्लाह

तआला ने उनको फिर सीधा और उचित मार्ग दिखाने के लिए एक पैग़म्बर (ईश्वर का संदेश लाने वाला) को जन्म दिया। उनका नाम हज़रत हूद (अलै0) था।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को अल्लाह की ओर बुलाया। उन्होंने उनसे कहा कि "पूजा के योग्य तो बस अल्लाह ही है। कोई देवी और देवता इस योग्य नहीं कि उसकी पूजा की जा सके। मनुष्य तो बस एक ही अल्लाह का दास है। उसको सदैव उसी का कहना मानना चाहिए। किसी और का आदेश ऐसा नहीं है जिसे मान कर मनुष्य अपने जीवन को सुधार सके। सब का मालिक अल्लाह ही है। तुम्हें यह अधिकार नहीं कि तुम शक्तिहीन लोगों के मालिक बनो और उन पर अत्याचार करो"!

क़ौम के सरदारों ने सुनकर कहा–" ऐ हूद (अलै0) ! तुम मूर्ख हो गए हो, तुम जो कुछ कह रहे हो सब झूठ है। और तुम ने यह सब बातें अपने मन से गढ़ ली हैं।"

हज़रत हूद (अलै0) ने कहा,"नहीं भाइयों ! ऐसा नहीं है। मैं अल्लाह का भेजा हुआ हूँ और उसका रसूल हूँ। मैं जो कुछ कह रह हूँ इस संसार को बनाने वाले मालिक की ओर से कह रहा हूँ और तुम्हारे भले को कह रहा हूँ। मैं तुमको उसकी ओर बुला रहा हूँ जो सारे प्राणियों को पालता है। देखो इसी मालिक ने नूह (अलै0) की क़ौम के बाद तुम्हें इस धरती का स्वामी बनाया है नूह (अलै0) की क़ौम की दशा को तुम जानते ही हो। उन लोगों ने भी उनकी बात को झुठलाया था। भलाई को छोड़कर

बुराई से अपना सम्बन्ध जोड़ लिया। फिर वह भी खुदा को भूल गए थे, फिर देखो उनकी क्या दशा हुई। वह किस प्रकार डुबो दिए गए। अब उस मालिक ने तुमको शक्ति दी है। यह ध न–दौलत उसी का प्रदान किया हुआ है। उस के आज्ञाकारी नहीं बनोगे तो तुम भी न बचोगे।''

'आद' की क़ौम के सरदारों ने सब कुछ सुना और सुनकर बोले :-

"अच्छा तो हम अपने बाप–दादा के धर्म को कैसे छोड़ दें। हमारे बड़े बुढों से जो बातें होती चली आई हैं उन्हें हम कैसे उनुचित ठहराएँ। क्या हमारे पूवर्ज मूर्ख थे जो उन्होंने उन देवी देवताओं की पूजा की थी ? –हम तुम्हारी बात नहीं मान सकते।"

हज़रत हूद ने समझाया कि 'ऐ भाइयो ! पूर्वजों के पीछे आँख बंद करके चलना ठीक नहीं। तुम्हारे मालिक ने तुम्हें भी बुद्धि दी है। उससे काम लो और सोचो क्या मैं जो कुछ कह रहा हूॅ वह अनुचित है। तनिक विचार तो करो कि तुमसे मैं कुछ मांगता तो नहीं। किसी लोभ में आकर तो मैं यह सब बातें नहीं कर रहा हूॅ। जो कुछ कह रहा हूॅ उसे सोचो और उसपर ध्यान दो – और देखो यदि तुमने मेरी बातों पर कान न धरा और इन्हें यूंही उड़ा दिया तो इस संसार का मालिक तुम्हें भी उसी प्रकार अपने अज़ाब में पकड़े गा जिस प्रकार तुम से पहले लोग पकड़े गए थे। उसकी भेजी हुई बातों की सुनी–अनसुनी कर देने का परिणाम बहुत भयानक होता है।"

क़ौम के लोग धन के नशे में लीन थे। उनको अपने सुखः

और विलास में यह सारी बातें बिल्कुल अनोखी–प्रतीत होती थीं। उन्होंने हंस कर टाल दिया और बोले कि 'ऐ हूद (अलै0) मालूम होता है तुम पर हमारे किसी देवता की फिटकार पड़ गई है। और तुम्हारा मस्तिष्क फिर गया है। जब ही ऐसी बातें कर रहे हो – अच्छा तुम अज़ाब की धमकियाँ बहुत दिया करते हो, तो फिर तुम उस अज़ाब को बुला लो। हम तो तुम्हारी बात मानेगें नहीं हमने ऐसी बातें बहुत सुनी हैं।

हज़रत हूद (अलै0) पर इन सरदारों की बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा वह उन्हें बराबर समझाते रहे। बहुत थोड़े से आदमियों ने उनकी बात मानी और शेष सारी क़ौम अपने आप में मग्न रही।

जब समझाने की सीमा पार हो गई और यह निश्चित हो गया कि अब इस क़ौम में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं रहा है जो अल्लाह के नबी की बात मान लेगा तो अल्लाह ने उस क़ौम पर अज़ाब भेजने का निर्णय कर लिया।

एक दिन एक ओर से बादल मेघ उठा। सब लोग देखकर प्रसन्न हो गए और बोले कि " हाँ आज बादल उठा है। ज़ोरदार वर्षा होगी वर्षा की आवश्यकता भी है –" लेकिन उन्हें पता नहीं था कि जिस बादल को देखकर वह प्रसन्न हो रहे थे, वह तो वही अज़ाब था जिसके लिए वह बड़ी जल्दी मचाया करते थे, वह बादल नहीं था एक आँधी उठ रही थी। एक ऐसी आँधी जैसी इससे पहले कभी न आई थी यह आँधी क्या, अल्लाह का अज़ाब था जो उस क़ौम को नष्ट करने के लिए भेजा गया था–आँधी

सात और आठ दिनों तक बराबर चलती रही। बड़े ज़ोर की आँधी, बहुत ज़ोर की। इस आँधी ने हर वस्तु को उखाड़ कर फेंक दिया। ऊँचे–ऊँचे मकान; बड़े–बड़े वृक्ष सब के सब जड़ से उखड़ कर दूर जा पड़े। पूरी बस्ती में कोई भी जीवित न बचा। बस हूद (अलै०) और आपके साथी मुसलमान बचा लिए गए। शेष लोग घरों में इस प्रकार मरे के मरे पड़े रह गए जैसे कि कभी वहाँ कोई निवास नहीं करता हो।

'आद' क़ौम की बस्तियों के खंडरों के निशान(चिन्ह) अब भी देखे जा सकते हैं। यह क़ौम अरब देश के दक्षिण में बसती थी। और जिस समय क़ुरआन उतर रहा था अरब के लोग इन खंडरों के निकट जाते थे, और जानते थे कि किसी युग में यहाँ एक क़ौम रहती थी जो बहुत शक्तिवान् थी।

याद रखने की बातें

1- धन–दौलत के नशे में मनुष्य प्रय: अल्लाह को भूल जाता है। और अपने मनमाने खुदाओं के सामने सिर झुकाने लगता है।

2- मनुष्य अल्लाह का बन्दा (भक्त) है। उसे बन्दा बन कर रहना चाहिए और उसके आदेशों का पालन करना चाहिए।

3- अल्लाह के रसूलों का अनुयाय करना अल्लाह का आज्ञाकारी बनने के लिए बहुत आवश्यक है। इस के बिना अल्लाह का आज्ञाकारी बन्दा बनना कठिन है।

4- बाप-दादा की बातें उचित भी हो सकती हैं और अनुचित भी। हमें उचित बातों को स्वीकार करना चाहिए और अनुचित बातों को छोड़ देना चाहिए।

5- बराबर अल्लाह की आज्ञा को टालते रहने का परिणाम सिवाय नाश हो जाने के और कुछ नहीं होता। ऐसी क़ौमें देर या सवेर अल्लाह के अज़ाब का शिकार होकर रहती हैं।

6- पिछले लोगों की दशा हमारे लिए शिक्षा का काम देती हैं।

हज़रत सालेह

अलैहिस्सलाम

'आद' के बाद 'सुमूद' की क़ौम बढी। उसने भी अत्यधिक उन्नति की।

ऊँचे-ऊँचे भवन हरे भरे खेत, खजूरों के बाग़, धन और दौलत सब कुछ उनके पास था। धीरे-धीरे उनमें भी बुराइयाँ उत्पन्न होने लगीं। उनके हृदय से अल्लाह की याद घटने लगी उनके बड़े लोग धनवान और अभिमानी हो गए और छोटों और निर्धन लोगों पर अत्याचार करने लगे। वही पूँजीवादियों के से ढ़ंग । सब कुछ अपने लिए-दूसरों को चाहे दुख : हो यो दुविधा। उन्हें अपने काम से काम। दौलत के नशे ने उन्हें अन्धा कर दिया। खुदा को भूल कर अपनी मनमानी करने लगे।

अल्लाह तआला ने उन्हें उचित मार्ग दर्शनि के लिए हज़रत सालेह (अलै0) को जन्म दिया। उन्होने उनसे कहा, "बन्धुओ ! क्या तुम्हें खुदा से भय नहीं लगता ? देखो उसके सिवाय कोई तुम्हारा स्वामी और मालिक नहीं है। उसी की वंदना करो। वही तो है जिसने तुमको जन्म दिया है। इस पृथ्वी पर बसाया है। और तुम्हारे लिए भिन्न भिन्न

प्रकार की वस्तुओं को उत्पादित करके तुम्हारे जीवित रहने का प्रबंध किया है।''

कौ़म वालें ने सुना। उन्हें यह बातें बड़ी अनोखी प्रतीत हुईं। वह बोले, " ऐ सालेह (अलै0) हमें तो तुमसे बड़ी आशा थी। तुम तो हमारी कौ़म के एक होनहार यूवक हो। यह तुमने क्या कहना शुरू कर दिया ? क्या हम अपने देवताओं को छोड़ दें ? वह देवता जिनको हमारे बाप-दादा भी मानते थे, और उनकी पूजा करते थे। हमको तो इस बात में बड़ा संदेह है जो तुम कह रहे हो।"

हज़रत सालेह (अलै0) ने कहा, भाइयो ! इस संसार के मालिक ने जो मेरा और तुम्हारा रब (ईश्वर) है। मुझे तुम्हारे पास अपना रसूल बनाकर भेजा है। मैं जो कुछ कहता हूँ अपनी ओर से नहीं कहता। अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। मैं तुमसे कुछ बदला तो नहीं मॉगता।"

कौ़म वाले बोले, वाह यह रसूल होने की भी अच्छी कही। तुम अल्लाह के रसूल कैसे हो गए ? तुम तो हमारे ही जैसे एक आदमी हो। मालूम होता है किसी ने तुम्हारे उपर जादू कर दिया है। जब ही तुम ऐसी बातें कर रहे हो।" हज़रत सालेह (अलै0) ने कहा- "मेरे भाइयो ! यह बात नहीं है। मैं जो कुछ कहता हूँ, तुम्हारे रब की ओर से कहता हूँ। और मैं तो स्वंय डरता हूँ कि यदि मैं उस मालिक की आज्ञा न मानूँ और तुम्हें उसका संदेश न सुनाऊँ तो ऐसा कौन है जो मुझे उसकी पकड़ से बचाले ? मैं तुम से यही कहता हूँ कि तुम उन लोगों की आज्ञा का पालन करना छोड़ दो जो अल्लाह के विरोधी हैं। देश में उपद्रव मचाते हैं और जो

सुधार नहीं कर सकते। आज्ञाकारी केवल अल्लाह का बनना चाहिए इसलिए कि वही इसके योग्य है।"

सुमूद की क़ौम के लोगों ने सुना और बोले, "अच्छा हम कैसे मान लें कि तुम अल्लाह के भेजे हुए रसूल हो? ऐसा ही है तो हम को कोई ऐसी निशानी (चिन्ह) दिखाओ फिर हम तुम्हारी बात मान लेंगे।" उन लोगों के कहने पर अल्लाह तआला ने अचानक एक ऊँटनी जन्म दे दी जो दूसरी ऊँटनियों से कुछ भिन्न थी। हज़रत सालेह ने कहा-- देखो यह ऊँटनी अल्लाह की जन्म दी हुई एक निशानी है इसको स्वतन्त्रता से चरने दो कोई उसे न सताए। यदि तुम ने उसे देख कर भी बात न मानी और उल्टा उस ऊँटनी को सताने लगे तो इसका अर्थ होगा कि तुम किसी तरह भी अल्लाह का मानने के लिये तैयार नहीं। ऐसा करने से तुम पर अल्लाह का अज़ाब आएगा और तुम्हारा नाश हो जाएगा।

हज़रत सालेह (अलै0) की बातें सुन कर कुछ निर्धन और शक्तिहीन व्यक्ति उनके संग हो गये थे। धनवान और बड़े लोग उनके शत्रू बन गए। उन्होंने उन कमज़ोरों से कहा, "तुम सचमुच सालेह (अलै0) को अल्लाह का रसूल मानते हो ?" वह बोले-"हाँ हमको यह विश्वास है कि हज़रत सालेह (अलै0) अल्लाह के रसूल हैं।

इस पर उन अहंकारियों ने कहा-'देखो तुम लोग जिसको सच्चा (सत्यवादी) जानते हो हम उसे झूठा कहते हैं-"और यह कहकर उन्होंने सब से पहले उस ऊँटनी की ओर ध्यान दिया जो अल्लाह ने अपनी निशानी के रूप में अपनी माया शक्ति से

जन्म दी थी । पहले तो उन्होंने उसकी टाँगें काटीं और फिर उसे मार डाला। और फिर अकड़ कर हज़रत सालेह से बोले–"अगर तुम ऐसे ही अल्लाह के रसूल हो तो उस अज़ाब को बुला लो, जिससे हमें भय दिलाया करते हो–"

हज़रत सालेह (अलै0) ने कहा–"अच्छी बात है। तीन दिन और अपने धर में आनंद उठा लो। यह ऐसा वचन है जो असत्य नहीं होगा।"

आप ने देखा कि अब सुमूद की क़ौम कितनी बिगड़ चुकी थी अब कोई सम्भावना नहीं थी कि वह उचित मार्ग पर चलने लगे। इसलिए अब अल्लाह का यह निर्णय हो गया कि उन का नाश कर दिया जाए।

अल्लाह ने हज़रत सालेह (अलै0) को और उन लोगों को जिन्होने उन की बात मान ली थी, अपनी कृपा से बचा लिया। और जिन लोगों ने अल्लाह के रसूल की बात न मानकर उपने उपर अत्याचार किया था। उन्हें अल्लाह के अज़ाब ने पकड़ लिया।

ऊँटनी के मार डालने के तीसरे दिन जब वह लोग रात को अपने–अपने घरों में सो रहे थे, एक बड़े ज़ोर का भुकम्प आया। लोगों को बड़ी तेज़ी से आवाज़ें सुनाई दीं। और सुबह को जब देखा गया तो सब अपने घरों में औंधे पड़े थे। अल्लाह के विरोधी सब-के सब मृत्यु का शिकार हो चुके थे। और ऐसा दिखाई देता था कि जैसे कभी इस बस्ती में कोई रहता ही न हो। अब सुमूद की बस्ती, बस्ती नहीं थी ईंटों का ढेर और खंडहर थी।

सुन रखो ! सुमूद ने अपने रब की बातों पर चलने से मना कर दिया। इसीलिए सुमूद अल्लाह की रहमत (दया) से दूर फेंक दिए गए।

यह पिछली क़ौमों की कहानियाँ हैं। हमारे लिए उनमें बड़ी उपदेश की बातें हैं। संसार में शांति के साथ फलने–फूलने के लिए अल्लाह की वंदना और उसके रसूल की आज्ञा का पालन के सिवाय कोई उपाय नहीं।

हज़रत इब्राहीम

अलैहिस्सलाम

मनुष्य अल्लाह को भूल जाता है। यही कारण है कि अल्लाह ने बार–बार अपने रसूलों को भेजा। इन रसूलों ने मनुष्य को उचित मार्ग दिखाया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम भी अल्लाह के एक रसूल थे। यह जिस परिवार में जन्मे उसके लोग अपने हाथों से देवी और देवताओं की मूर्तियाँ बनाते थे।और उनको बाज़ार में बेचते थे। यह लोग मूर्ति पूजते थे। और यही क्या, सारे का सारा देश अल्लाह को भूल कर देवियों और देवताओं की पूजा में लगा हुआ था। सब–के–सब मुर्तियों के आगे झुकते और उनसे ही मनोकामना पूरी होने की प्रार्थना करते थे। यह लोग तारों की भी पूजा करते थे। सुर्य और चन्द्रमा भी उनके देवता थे। इस प्रकार उन्होंने एक खुदा को छोड़कर सैकड़ों खुदा बना लिए थे।

रब (अल्लाह) की पहचान

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जब ज़रा बड़े हुए तो उन्होंने अपने परिवार और अपनी क़ौम के लोगों के कामों को देखा और समझा। उनकी समझ में यह बात न आई कि जिन मूर्तियों को हम अपने हाथों से गढ़ें, उनमें यह शक्ति कहाँ से आ सकती है कि वह हमारे काम बना सकें और हमें लाभ या हानि पहुँचा सकें। वह इस बात पर बराबर विचार किया करते थे। एक बार हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने रात को एक चमकता हुआ तारा देखा, लोग उसकी पूजा करने लगे। उनको देख कर हज़रत ने कहा–"यही तारा मेरा रब है।" मगर थोड़ी देर के बाद तारा छुपने लगा तारे को डूबते देखकर हज़रत बोले–"मुझे तो यह छुपने वाले अच्छे नहीं मालूम होते।" कुछ देर बाद चमकता हुआ चाँद निकला। हज़रत ने कहा, "यह मेरा रब है।" लेकिन थोड़ी देर के पश्चात वह भी छुप गया। यह देख कर हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने कहा, "यह भी मेरा रब नहीं है। मेरा रब तो कोई और ही है अगर वह मुझे उचित मार्ग न दिखाता तो मैं भी उपनी क़ौम के सामने भटक जाता।"

सवेरा होते–होते सूरज निकल आया। चमकीला और रौशन (प्रकाशमान) उसे देखकर हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने कहा, "हाँ यह मेरा रब है। यह सब से बड़ा है।" लेकिन..

प्रचार का आरम्भ

दिन समाप्त हुआ। संध्या हुई और सुर्य ने मुख छुपा लिया। यह देखकर हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा: भाइयो ! मैं तो ऐसे खुदाओ से भर पाया यह कहाँ के "खुदा"

हैं। यह सब तो आप ही किसी के आदेश में बंधे मालूम होते हैं। इनको देख कर तो यही बात समझ में आती है कि यह स्वंय किसी के बनाये हुए नियमों पर चल रहे हैं उनकी पूजा करना ठीक नहीं, मै ने तो सब से मुँह मोड़ लिया और बस उसी एक अल्लाह का पुजारी बन गया – मैं किसी को भी उस का साझी नहीं मानता।"

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बातें सुनकर उनकी क़ौम वालों ने उनसे झगड़ना आरम्भ कर दिया। बोले: ऐसा तो हमारे बाप–दादा से होता आया है क्या हमारे पूवर्ज मूर्ख थे ? क्या हमारे बड़े इन बातों को नहीं समझते थे? "हज़रत ने उत्तर दिया– कैसी बात है क्या तुम अल्लाह के बारे में झगड़ा करते हो, यह उसकी कृपा है कि उसने मुझे ठीक बात समझा दी। मुझे तुम से कोई भय नहीं है और न मैं तुम्हारे इन देवी–देवताओं से भयभीत हूँ, जिन्हें तुमने अल्लाह का साझी बना रखा है। होता वही है जो मेरा रब चाहे। मेरा रब बड़ा शक्तिवान है। वह हर बात का पूरा–पूरा ज्ञान रखता है।

और भला मैं उन चीज़ों से क्यों डरूँ जिन्हें तुमने अल्लाह का साझी बना लिया है। मैं जानता हँ कि यह बात बिल्कुल अनुचित है, तुम्हारी इस बात का कोई प्रमाण नहीं है। यह सब तुम्हारी अपनी मनगढत है। जो लोग अल्लाह पर ईमान ले आएँ उनके हृदय में बल होता है और वह उचित मार्ग पर होते हैं।

पिता को उपदेश

हज़रत इब्राहीम(अलै0) को अल्लाह ने उचित मार्ग दिखलाया। उनको ऐसा ज्ञान दिया कि वह उचित बात तक पहुँच

बात तक पहुँच गए। इस बात का ज्ञान प्राप्त हो जाने के बाद उन्होंने अपने पिता से भी बात–चीत की। उनके पिता मूर्ति बनाते और बेचते थे और उनकी पूजा भी करते थे।

एक दिन हज़रत ने उपने पिता से कहा–"पिता जी ! आप ऐसे बुतों की पूजा क्यों करते हैं जो न सुन सकते हैं न देख सकते हैं। और न आपके किसी काम आ सकते हैं ?

पिता जी ! मुझे अल्लाह ने ज्ञान दिया है। अगर मेरा कहना मानें तो मैं आप को उचित मार्ग बताऊँ। यह जो कुछ आप कर रहे हैं सब शैतान (धूर्त) का धोखा है आप शैतान का कहना न मानें, शैतान तो आप ही भटका हुआ है। और अल्लाह की आज्ञा को टाल चुका है। पिता जी ! मुझे भय है कि कहीं आप को अल्लाह का अज़ाब न आ पकड़े। उस घड़ी शैतान की मित्रता कुछ भी काम न आएगी।

हज़रत इब्राहीम के पिता यह सारी बात–चीत सुनकर बहुत बिगड़ गऐ और बोले "अच्छा तो तू हमारे देवी–देवताओं से बिल्कुल फिर गया। देख अगर तू ने अपने इस विचार को नहीं त्यागा तो तुझे इतने पत्थर मारूँगा कि तू याद ही करेगा। जा निकल जा मेरे पास से।"

हज़रत इब्राहीम (अलै0) को अपने बाप की रूष्ट बातें सुनकर बहुत दुख: हुआ। आप बोले, "अच्छा, अगर आप मुझे निकालते हैं तो निकाल दें, मैं तो यही कहता हूँ कि अल्लाह आप को सलामत (कुशलपूर्वक) रखे। मेरा रब बड़ा कृपालु है। मैं उससे आपके लिए प्रार्थना करूँगा कि वह आपको क्षमा करदे और

आप को उचित मार्ग दिखा दे।

मैं आप और उन देवी–देवताओं को जिन को आप पूजते हैं छोड़ने के लिए तैयार हूँ। लेकिन यह नहीं चाहता कि मैं अपने रब को छोड़ दूँ और उसे न पुकारूँ।"

हज़रत इब्राहीम (अलै0) घर से निकाल दिए गए। उन्होंने सत्य बात के लिए अपना घर, धन–दौलत और अपने पिता की गद्दी सब कुछ छोड़ दी।

निरंतर आमत्रंण

हज़रत इब्राहीम (हलै0) ने जो बातें अपने पिता से कहीं, वही बातें अपनी बस्ती के अन्य लोगों से भी कहीं। वह जिस बात को सत्य मान चुके थे वही बात वह लोगों को समझाते थे। उन्होंने कहा; भाइयो ! तुम ने यह मूर्तियाँ कैसी बना रखी हैं ? आप ही बनाते हो, और फिर अनका सहारा पकड़ कर बैठ जाते हो, क्या यह मूर्तियाँ तुम्हें कोई लाभ पहुँचा सकती हैं। या कोई हानि पहुँचाना उनके वश में है ? वह बोले –

"ऐसा तो हमारे बाप–दादा से होता आया है। हमने तो यही देखा है कि हमारे बड़े भी इसी प्रकार मूर्ति की पूजा करते थे –"हज़रत ने कहा: भाइयो ! यह मूर्तिपूजन तो अनूचित ही है चाहे उसे तुम करो या तुम्हारे बड़े, कोई बुरा काम किसी के करने से भला नहीं हो जाता, मनुष्य को उपनी बुद्धि से काम लेना चाहिए, यह कोई बात नहीं है कि जो बात बड़ों से होती आई है वह अच्छी ही होगी।" यह सुनकर उन्होंने पूछा। अच्छा तुम

हमारी मूर्ति पूजा को तो बुरा कहते हो, तनिक यह तो बताओ कि इसके सिवाय कोई और अच्छी और सच्ची बात भी लाए हो। या यह भी कोई हँसी और खेल है कि जिस बात को जी चाहा बुरा कह दिया।"

आप ने फ़रमाया –"क्यों नहीं ! मैं कहता तो हूँ कि, तुम्हारा असली मालिक वही है जो उस आकाश व पृथ्वी का स्वामी और मालिक है और जिसने यह सब कुछ बनाया है।"

लोगों ने यह सारी बातें सुनीं वह उनको झूठला न सके। और कैसे झुठलाते ? वंह जानते थे कि इस सारे संसार का बनाने वाला मालिक तो कोई और ही है। परन्तु उनके लिए यह बड़ा कठिन कार्य था कि वह अपने पूर्वजों के रीति–रिवाजों और अपने देवी–देवताओं की पूजा–पाठ का क़रोबार छोड़ देते–वह सब कुछ सुनते थे। किन्तु करते वही थे जो उन का मन चाहता था। हज़रत इब्राहीम (अलै0) जब समझाते–समझाते थक गए तो उन्होंने सोचा –"अच्छा तो अब मैं एक चाल चलूँगा। तनिक यह कहीं हट कर जाएँ।"

दावत (आमंत्रन) का एक नया ढंग

एक दिन ऐसा हुआ कि वह सब लोग कहीं चले गए और हज़रत इब्राहीम (अलै0) को छोड़ गए। हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने उनकी सारी मूर्तियाँ तोड़ डालीं। केवल एक बड़ी मूर्ति को छोड़ दिया। जब यह लोग लौट कर आए और देखा तो बहुत बिगड़े। और पूछा, " हमारे देवताओं की यह दुर्गत किसने बनाई है? कोई बहुत बड़ा अत्यचारी है जिसका यह काम है।" किसी

ने कहा, "हो न हो यह उसी नव यूवक का काम है जिसे इब्राहीम कहते हैं, उसे बुलाओ और उसके यह करतूत सब बस्ती वालों को बुला कर दिखाओ।"

जब हज़रत इब्राहीम (अलै0) आए तो उन्होंने पूछा, "क्यों इब्राहीम, हमारे देवताओं के साथ यह दुष्ट व्यवहार तुमने किया है–? आप ने फ़रमाया :–

"क्यों इस बड़े वाले देवता से पूछो न। उसी ने सब कुछ किया होगा यह तो बोलता होगा। सब कुछ बता देगा"

यह सुनकर सब लोग अपने मन ही मन में कुछ विचार करने लगे। सब ने अपने मन में यही कहा कि यह है तो बड़ा अंधेर कि हम एसों को अपना खुदा जानते हैं जो हमारी देख–भाल तो क्या करेंगे स्वंय अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते। ऐसा प्रतीत होता था कि सब पर घड़ों पानी पड़ गया है सब मुँह लटकाए खड़े थे। थोड़ी देर के पश्चात हज़रत इब्राहीम से बोले, "यह तो आप जानते ही हैं कि यह क्या बोल सकते हैं, तनिक आप ही बता दें कि यह हुआ क्या –?"

हज़रत इब्राहीम (अलै0) पे फ़रमाया : भाइयो ! ज़रा सोचो। क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसों की पूजा करते हो जो न तुम्हें लाभ पहुँचा सकते हैं और न हानि। मैं तो भर पाया तुम से भी और तुम्हारे इन देवी–देवताओं से भी जिनकी तुम पूजा करते हो न जाने तुम्हारी बुद्धि को क्या हो गया है तुम इतनी मोटी बात भी नहीं समझ सकते कि असली मालिक कौन है। और लाभ–हानि किसके हाथ है।

नबी की हत्या का निर्णय

यह सुनना था कि सारे लोग क्रोधित हो उठे। सब को पता लग गया कि मूर्तियों को तोड़ना किसका काम है। सब ने यही कहा कि इब्राहीम को आग में झोंक दो। और इस प्रकार अपने खुदाओं का बदला ले लो।"

यह कहना था कि एक बहुत बड़ा अलाव (आग का ढेर) लगाया गया। हज़ारों मन लकड़ी का ढेर लगा कर आग जलाई गई और हज़रत इब्राहीम (अलै0) को इस जलती आग में डाल दिया गया।

जिसे अल्लाह बचाना चाहे उसे कौन मार सकता है। हज़रत इब्राहीम के दुश्मनों ने तो उनको आग में झोंक ही दिया था। और समझे कि उनका काम समाप्त हो गया लेकिन आप सोचें तो सही आग जलाती क्यों है ? इसी लिए तो जलाती है कि उसको जन्म देने वाले ने उसको जलाने के योग्य बनाया है तो वह मालिक यह चाहे कि आग न जलाए तो भला आग में कहाँ इतना साहस कि वह किसी वस्तु को जला डाले – हज़रत इब्राहीम (अलै0) को लोगों ने आग में डाला। अल्लाह तआला को अभी उनसे बड़े काम लेने थे, अल्लाह की आज्ञा से आग ठंडी हो गई । कैसे ठंडी हो गई। यह तो हमको बताया नहीं गया, हाँ यह बताया गया है कि कुछ ऐसी ही बात हुई कि हज़रत इब्राहीम (अलै0) इस आग से बचा लिए गए।

हिजरत

अब हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने अच्छी तरह समझ लिया कि उनके देश के लोग उनकी बात नहीं मानेंगे। और अब उन्हें समझाना–बुझाना बिल्कुल व्यर्थ है। उन्होंने सोचा कि अब किसी और देश में चलकर लोगों को अल्लाह के दर्शाये हुए मार्ग की ओर बुलाया जाए। हज़रत इब्राहीम (अलै0) अपनी क़ौम, अपने देश, अपने पिता, अपने घर, अपने सम्बन्धियों सब कुछ छोड़ कर चल खड़े हुए – घर से निकल कर देश–विदेश घूमते फिरे। लोगों को अल्लाह की बातें बताते रहे और उसके दीन (धर्म) की ओर बुलाते रहे। अब हज़रत इब्राहीम (अलै0) बहुत बूढ़े हो गए थे।

संतान से दीन की सेवा

अल्लाह का करना देखो कि बुढापे में आप के यहाँ दो पुत्र हुए। बड़े का नाम हज़रत इस्माईल (अलै0) और छोटे का नाम हज़रत इसहाक़ (अलै0) था – जब कोई व्यक्ति किसी काम के लिए अपने तन–मन–धन से तैयार हो जाता है तो फिर वह अपनी किसी वस्तु को इस काम में लगाने से बचाकर नहीं रखता। हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने अपने दोनो पुत्रों को इस काम में लगाने का निर्णय कर लिया जो वह स्वंय सारा जीवन करते रहे थे। उन्होंने हज़रत इसहाक़ (अलै0) को शाम के देश में छोड़ा और हज़रत इस्माईल (अलै0) को अरब के देश के उस स्थान पर बसाया जहाँ अब मक्का है। हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने जब इस सुनसान और चटियल मैदान में अपने बड़े पुत्र और उनकी माता

को लाकर छोड़ा तो रब से प्रार्थना की कि "ऐ मालिक ! मैंने अपनी संतान इस मैदान में लाकर बसाई है जहाँ कोई खेती बाड़ी नहीं उगती। ऐ मालिक तू मुझे और मेरी संतान को मूर्ति पूजा से बचाए रखना। ऐ रब ! इन मूर्तियों के चक्कर में फंस कर बहुत लोग सीधे मार्ग से भटक गए हैं, कहीं ऐसा न हो कि मेरी संतान भी भटक जाए और तुझे भूल कर उनकी पूजा करने लगे–ऐ मेरे रब ! मैंने अपनी संतान को इस मैदान में इसलिए बसाया है कि: नमाज़ क़ायम करें।–ऐ मालिक ! तू अपनी क़ुदरत (मायाशक्ति)से इनके खाने–पीने का प्रबंध कर दे। और उनके लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के फल पैदा (उत्पादित) कर दे।"

हज़रत इब्राहीम (अलै0) की परीक्षा

अल्लाह का नाम लेना बहुत सरल है परन्तु अपने सम्पूर्ण जीवन को अल्लाह के लिए लगा देना सरल नहीं। जो लोग अल्लाह के दीन पर चलने का निर्णय करते हैं अल्लाह उन को जाँचता भी है। हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने यह निर्णय किया कि वह अपने बाप–दादा के धर्म को छोड़ कर अल्लाह के दीन पर चलेंगे। तो आपने देखा कि उनकी कैसी कड़ी परीक्षा हुई। उनको अपनी जान–जोखिम में डालनी पड़ी और अपना देश, अपना घर और अपना सब कुछ छोड़ना पड़ा।

हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने यह सब कुछ किया, और यह प्रमाणित कर दिया कि उन्हें अल्लाह की इच्छा के सामने

1- नमाज़ क़ायम करने का अर्थ नमाज़ पढ़ना ही नही है बल्कि इसका अर्थ है पूरा दीन क़ायम करना स्वंय पूरे दीन पर चलना और दूसरों को उसी दीन पर चलाना।

न अपना जीवन प्यारा है न अपना धन प्यारा है—परन्तु अभी एक परीक्षा शेष थी, देखना यह था कि उनके मन में संतान का जो प्रेम है वह कहीं उस प्रेम से अधिक तो नहीं है जो उन्हें अल्लाह से है।

पुत्र का बलिदान

हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने एक बार यह सपना देखा कि वह अपने प्रिय पुत्र हज़रत इस्माईल (अलै0) को क़ुर्बान (बलि) कर रहे हैं। हज़रत ने समझ लिया कि इसका अर्थ क्या है। उन्होंने अपने पुत्र हज़रत इस्माईल (अलै0)को बुलाया और अपना सपना उनको सुनाया। हज़रत इस्माईल (अलै0) उस पिता के पुत्र थे जिसने कभी अल्लाह की इच्छा से मुख न मोड़ा था। उस पिता के पुत्र जिसने अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए अपना सब कुछ लगा दिया था उस पिता के पुत्र जिसने अपने पुत्रों को अल्लाह के दीन के लिये दे दिया था और जिसने अपने रब से यह प्रार्थना की थी कि वह इन पुत्रों के हाथों अपना दीन स्थापित करा दे -

हज़रत इस्माईल (अलै0) ने अपने पिता का सपना सुना वह भी जान गए कि अल्लाह की इच्छा क्या है – बोले, "पिता जी ! आप इस आदेश का पालन कीजिए जो आपको दिया जा रहा है – अल्लाह ने चाहा तो आप देखेंगे कि मैं कैसा धैर्य रखता हूँ।"

कैसे अच्छे थे वह पिता जिन को अल्लाह से अधिक कोई वस्तु प्रिय नहीं थी और कैसे अच्छे थे वह पुत्र जो अल्लाह का

आदेश सुनते ही अपने प्राण की बलि देने के लिए तैयार हो गए – सत्य तो यही है कि हमारे पास जो कुछ है वह उसी स्वामी का है हमारा कुछ नहीं है। इस्लाम यही है कि मनुष्य ये बात स्वीकार कर ले और इसके लिए तैयार रहे कि समय आने पर वह अपना सब कुछ अल्लाह के मार्ग में लगा देगा। जो आज्ञा मिलेगी उसका पालन करेगा और अल्लाह से अधिक कोई वस्तु उसे प्रिय न होगी।

तो जब अल्लाह ताआला के यह दोनों शिष्ट भक्त हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अलै0) –अल्लाह के आदेश के समक्ष झुक गए तो हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने अपने पुत्र को अल्लाह के नाम पर बलि देने के लिए पछाड़ा – अत: यह प्रमाणित हो गया कि हज़रत इब्राहीम (अलै0) को अल्लाह का आदेश प्रिय था अपना पुत्र प्रिय नही था। यही बात देखनी थी – हज़रत इब्राहीम ने अपना सपना सच कर दिखाया। संकेत पाते ही अपनी सब से अधिक प्रिय वस्तु का बलिदान देने के लिए तैयार हो गए । यही एक मुसलमान का कर्तव्य है। अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम (अलै0) का यह त्याग स्वीकार कर लिया और पुकार कर कहा कि– "इतना ही पर्याप्त है। तुम ने अपना सपना सच कर दिखलाया। अब पुत्र बलि की आवश्यकता नहीं रही"।

हमारे लिए उपदेश

हम और आप भी मुस्लिम हैं। हम भी यही स्वीकार करते हैं कि हमारे पास जो कुछ है वह हमारा नहीं है, अल्लाह का है, हमने भी यही प्रतिज्ञा की है कि हम अल्लाह के आदेश

पर चलेंगे। उसकी आज्ञा के सामने न अपने मन की बात मानेंगे और न किसी दूसरे की इच्छा की परवाह करेंगे। हज़रत इब्राहीम (अलै0) की इस बात में हमारे लिए बड़ा उपदेश है। इसी कारण हम हर वर्ष उसकी याद मनाते हैं। यह बक़रईद (मुसलमानों का एक त्योहार जिसमें क़ुर्बानी की जाती है) पर पशुओं की क़ुर्बानी इसी बात को याद दिलाने के लिए की जाती है। अल्लाह के दिए हुए पशुओं को जब हम अल्लाह के रास्ते पर क़ुर्बान करते हैं तो अपने इस ईमान (धर्म) को स्वस्थ कर लेते हैं कि हमारा धन – जान सब कुछ अल्लाह का है और समय आने पर हम अपनी हर वस्तु अल्लाह के रास्ते में बलि देने के लिए तत्पर हैं।

अल्लाह का मित्र

आप ने देखा, हज़रत इब्राहीम (अलै0) को कैसी--कैसी परीक्षाएँ देनी पड़ीं। घर छूटा, जन्मभूमि छूटी, आग में डाले गए, देश–विदेश घूमना पड़ा परन्तु वह इन सब परीक्षाओं में पूरे उतरे। और फिर एक बात में तो उन्होंने कमाल ही कर दिया कि मालिक का संकेत पाते ही वह अपने प्रिय पुत्र तक की क़ुर्बानी के लिए तैयार हो गए। यही कारण था कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपना मित्र कहा। और उन्हें सभी मनुष्यों का इमाम (जगनेता) बनाया।

जब हज़रत इब्राहीम (अलै0) से अल्लाह तआला ने कहा कि "हम तुमको संसार का इमाम बनाते हैं।" तो आप ने पूछा "क्या मेरी संतान को भी यह स्थान मिल रहा है" ? अल्लाह ने फ़रमाया

"देखो, मेरा वादा उन लोगों के लिए नहीं है जो अनुचित मार्ग अपना कर स्वंय अपने उपर अत्याचार करते हैं।" यह सत्य है कि अल्लाह को कोई व्यक्ति इस लिए प्रिय नहीं हो सकता कि वह किसी विशेष जाति वंश या परिवार से सम्बन्ध रखता है जो कोई अच्छे कार्य करता है और अल्लाह को अपना स्वामी और मालिक मान कर जीवन व्यतीत करता है वह उसे प्रिय होता है।

मित्र को अरबी भाषा में "ख़लील" कहतें हैं हज़रत इब्राहीम (अलै0) को ख़लीलुल्लाह अथार्त अल्लाह का मित्र कहा जाता है मनुष्य के लिये यह कितना उच्च स्थान है।

काबा का निर्माण

फिर ऐसा हुआ कि हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने अल्लाह की आज्ञा से काबा बनाना आरम्भ किया। अरब देश के मक्का नगर में काबा एक घर का नाम है। यह एक ऐसा घर है जो केवल अल्लाह को पूजने वालों के लिए बनाया गया था। हज़रत इब्राहीम (अलै0) और आपके पुत्र हज़रत इस्माईल (अलै0) काबे की दीवारें उठा रहे थे तो अपने रब से इस प्रकार प्रार्थना करते जाते थे –

"ऐ हमारे मालिक ! तू हमारी इस कोशिश (प्रयत्न) को स्वीकार कर ले। तू ही हमारी दुआओं का सुनने वाला और सब ज्ञान रखने वाला है। तू जानता है कि हम इस घर को केवल तेरी प्रसन्नता के लिए बना रहे हैं। ऐ मालिक ! तू हमें अपना सच्चा मुस्लिम बना दे और हमारी नस्ल (जाति) में ऐसे लोगों को जन्म दे दे जो केवल तेरी ही आज्ञा पर चलने वाले (मुस्लिम)

हों। तू हमें अपनी पूजा करने का उचित ढंग सिखा दे। और हमारे पश्चाताप को स्वीकार कर । हमसे जो भूल हो जाए उसे क्षमा कर दे, तू बड़ा ही कृपालु और प्रायश्चित करने वाला है।

ऐ हमारे मालिक ! तू हमारी नस्ल में एक ऐसे रसूल[1] को जन्म देना, जो उन्हें तेरी आयतें पढ-पढ कर सुनाये, तेरे भेजे हुए आदेश उन्हें समझाए, उन्हें इस योग्य बनाए कि वे तेरा दीन (धर्म) समझ सकें और वह उन्हें बुराइयों से पवित्र कर दे।

ऐ हमारे मालिक ! तू सब से अधिक शक्ति रखता है। और सब से अधिक विद्या रखता है।"

जब काबा बन गया तो अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम (अलै0) को आदेश दिया कि वह इसे मूर्ति-पूजन की गंदगी से पवित्र रखें। यह घर केवल एक अल्लाह की पूजा का केन्द्र है। इसे हर प्रकार के शिर्क (अल्लाह की ज़ात में किसी और को सम्मिलित करना) से पवित्र रखें और इसे शांति का केन्द्र बनाएँ, ताकि सारे संसार के लोग यहाँ आएँ और एक खुदा की पूजा का पाठ पढ कर वापस जाएँ।

वह यहाँ से तौहीद(खुदा को एक मानना) के पैग़ाम (संदेश) को सारे संसार में पहुँचा दे- लोग यहाँ आकर तवाफ़ करें। अल्लाह के आगे झुकें और सज्दा करें अर्थात् उसकी नमाज़ें पढें।

1. यह संकेत है हज़रत मोहम्मद स0 की ओर

हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने अल्लाह के इस आदेश को पूरा किया और काबे को संसार में तौहीद का सब से बड़ा केन्द्र बना दिया।

बच्चो ! यह है हज़रत इब्राहीम (अलै0) की जीवन–कथा। और यह है उनकी दी हुई शिक्षा। अब सोचो वह कितना बड़ा मूर्ख होगा जो इन बातों से मुँह मोड़े। मनुष्य के लिए सब से उत्तम बात यही है कि वह अपने सच्चे मालिक को पहचाने। हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने अपने पूरे जीवन में यही करके दिखा दिया। जब भी उनके मालिक ने उनको कोई आदेश दिया उन्होंने तुरंत ही उसे पूरा कर दिखाया और यही कहा कि " मैं तो बस इस पूरे संसार के मालिक का ही आज्ञाकारी हूँ"।

अंतिम वसीयत

जब हज़रत इब्राहिम (अलै0) की मृत्यु का समय निकट आया तो आप ने अपने पुत्र, पोतों और परिवार के लोगों को अपने निकट बुलाया और कहा:-

1- यह संकेत है हज़रत मुहम्मद सल्ललललाहो अलैह वसल्लम की ओर।

2- इस पूरे संसार को जन्म देने वाला, पालन करने वाला मालिक, स्वामी शासक और पूजा के योग्य केवल एक ही है और वह अल्लाह है। यही तौहीद का संदेश है इसी बात को संसार भर में फैलाने के लिए काबे का निर्माण हुआ है।

3- काबा के चारो ओर घूमना भी पूजा है इसे तवाफ़ कहते है।

4. क़ुरआन में है :– असलम्तो लेराब्बिल आलमीन।"

"ऐ मेरे पुत्रो ! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस दीन को पसंद कर लिया है जो मैने तुम्हें सिखाया और बताया है। तुम्हें मेरा यही उपदेश है कि देखो तुम मरते दम तक मुस्लमान ही रहना और इस्लाम ही पर जान देना।

हज़रत लूत

अलैहिस्सलाम

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहीम (अलै0) के भतीजे थे। जब हज़रत इब्राहीम (अलै0) अपनी जन्म–भूमि से निकले तो हज़रत लूत (अलै0) उनके साथ थे। हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने उन्हें शाम के देश में भेजा। हज़रत लूत (अलै0) भी अल्लाह के नबी थे।

शाम के देश में बहीरे मुर्दार के नाम से एक छोटा समुन्द्र है जो समुन्द्र के तल से भी कई हज़ार फ़िट नीचा है। इस क्षेत्र में जो लोग निवास करते थे, उनको उचित मार्ग दर्शाने के लिए हज़रत लूत (अलै0) भेजे गए थे।

हज़रत लूत (अलै0) ने पहले तो उन लोगों को इस्लाम की विशेष बातें बतायीं। आपने उनसे कहा।"

1- लोगो ! तुम्हारा मालिक वही है जिसने तुम्हें जन्म दिया है। तुमको उसकी वंदना करनी चाहिए और उसी का कहना मानना चाहिए।

2- भाइयो ! इस बात का ध्यान रखो कि तुम जो काम भी करो अपने मालिक की इच्छा अनुसार करो। और तुम सदैव इस बात से भयभीत रहो कि कहीं वह तुम से अप्रसन्न न हो जाए।

3- अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए तुम मेरा कहा मानो, और वह कार्य करो जो मैं बताऊँ।

4- मैं तुमसे अपने किसी काम का बदला नहीं माँगता, मुझे जो कुछ मिलेगा वह अल्ला से मिलेगा। तुमसे मुझे कुछ लेना नहीं है।

इन बातों के बताने के बाद हज़रत लूत (अलै0) ने उन्हें इस गंदे काम से रोका जो वह किया करते थे, वह गंदा काम यह था कि लोग लड़कों के साथ बुरा काम करते थे, उन लोगों से पहले संसार में कोई इस काम को जानता भी न था। सब से पहले उन्होंने ही इस बुराई को शुरू किया था।

जब कोई बुराइयों में फंस जाता है तो बुराइयाँ ही उसे भली मालूम होती हैं। उन लोगों ने जब हज़रत लूत (अलै0) की बातें सुनीं तो उल्टा बिगड़ने लगे। बोले "अच्छा तो एक आप ही बड़े नेक और सत्यवादी बनकर आए हैं। ऐसे ही नेक बनोगे तो हम तुमको अपनी बस्ती से निकाल बाहर करेंगे, यह उपदेश

देना है तो कहीं और जाओ हमारे यहाँ तुम्हारा ठिकाना नहीं।"

हज़रत लूत (अलै0) ने बहुत समझाया और खोल–खोल कर बताया कि अल्लाह को अप्रसन्न करने का परिणाम अच्छा नहीं होता। वह बड़ा शक्तिवान् है। उसकी पकड़ बहुत कड़ी होती है। उसके अज़ाब से डरना चाहिए। मेरा कुछ न बिगड़ेगा। तुम सब के सब नाश हो जाओगे। यहाँ भी नाश होगा और इस जीवन के बाद जो सदैव रहने वाला जीवन आने वाला है वहाँ अल्लाह के अज़ाब में पकड़े जाओगे नरक तुम्हारा ठिकाना होगा।"

जब समझाने की सीमा पार हो गई और लोगों ने हज़रत लूत (अलै0) की कोई बात न सुनी तो अल्लाह के अज़ाब का समय आ गया। एक दिन हज़रत लूत (अलै0) के घर कुछ अतिथि आए। यह अतिथि देखने में लड़के थे और बड़े सुन्दर थे। बस्ती वालों ने जब उन्हें देखा तो उनकी नीयत बिगड़ने लगी। हज़रत लूत (अलै0) को बड़ी चिंता हुई। उन्होने लोगों से कहा कि "देखो मेरे अतिथियों को अपमानित मत करो, यह तुम्हें क्या हो गया है" ?

क्या तुम में कोई एक भला व्यक्ति भी ऐसा नहीं रहा जो तुम को अच्छी बातें बता सके ? देखो पुरूषों के लिए अल्लाह तआला ने स्त्रियाँ बनाई हैं। उन से विवाह करो। यह उचित काम है। इसके सिवाय जो कुछ करोगे वह गंदा काम है और बहुत बड़ा पाप है। क़ौम में बहुत–सी लड़कियाँ हैं। यह सब मेरी पुत्रियों के समान हैं। तुम उनसे निकाह (ब्याह) कर लो।"

क़ौम के दुष्ट लोगों ने हज़रत लूत (अलै0) की बातें सुनी–अनसुनी कर दीं। बोले, आप को पता ही है कि हमारा अभिप्राय क्या है। हमें स्त्रियों से क्या काम, हम यह बातें मानने वाले नहीं ।"

हज़रत लूत व्याकुल हो उठे कि अब क्या किया जाए। इतने में उन अतिथियों ने हज़रत लूत (अलै0) से कहा कि : आप को चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं। हम तो अल्लाह के भेजे हुए फ़रिश्ते (अल्लाह का भेजा हुआ दूत) हैं। उन पर अज़ाब लेकर आए हैं। सुबह तक देखीए क्या होता है। सुबह होने में देर ही क्या है ?"

अल्लाह तअला की आज्ञा को चलाने के लिए अल्लाह के फ़रिश्ते काम करते हैं। संसार का सारा प्रबंध अल्लाह तआला इन से ही कराता है। संसार वालों के लिए नेमतें भी यही लाते हैं और अज़ाब भी यही लेकर आते हैं। अल्लाह तआला ने जब उनपर अज़ाब भेजा तो अज़ाब लाने वाले फ़रिश्ते सुन्दर लड़कों के रूप में आए और उन दुष्ट लोगों ने उन्हें देखकर जो कुछ किया उससे यह प्रमाणित हो गया कि यह लोग अब सीधे मार्ग पर चलने वाले नहीं।

हज़रत लूत (अलै0) ने एक बार फिर उन्हें पूरी बात समझा दी और उन्होने फिर इस बात को वैसे ही ठुकरा दिया जैसे अब तक करते रहे थे।

फ़रिश्तों ने हज़रत लूत (अलै0) से कहा, "अब अज़ाब का समय आ गया है। आप अपने साथी मुसलमानों को लेकर

रातों रात बस्ती से दूर बाहर चले जाइये" – हज़रत लूत (अलै0) ने ऐसा ही किया उन की पत्नी अब तक ईमान नहीं लाई थीं – उसे काफ़िरों के साथ ही छोड़ दिया गया। वास्तव में मनुष्य को उसके अपने अच्छे काम ही अल्लाह के अज़ाब से बचा सकते हैं। यहाँ सम्बन्ध काम नहीं आता, नबी की पत्नी होने से कोई स्त्री अल्लाह को प्रिय नहीं हो सकती, अल्लाह को वह पुरूष और वहीं स्त्री प्रिय होती है जो उसकी आज्ञा का पालन करें।

जब हज़रत लूत (अलै0) और आप के साथी बस्ती से बाहर दूर चले गए तो बस्ती पर अल्लाह का अज़ाब आया। ऐसा अनुभव हुआ जैसे ज्वालामुखी फट पड़े। सारी बस्ती नष्ट हो गई, बस्ती पर खूब पत्थर बरसे। अल्लाह की आज्ञा न मानने वालों का कहीं पता–निशान न रहा।

अल्लाह के नबी को झुठलाने वाले एक पल में इस प्रकार मिट गए जैसे कभी वहाँ रहते हीं न थे – सच है अल्लाह की पकड़ बहुत कड़ी है। उसके निर्णय को कोई टाल नहीं सकता। वह बड़ी शक्ति वाला है। इन बातों में उनलोगों के सीखने के लिए बहुत –सी–बातें हैं जो अल्लाह की आज्ञा को टाल देते हैं। जो उसके रसूलों की बताई हुई बातों पर नहीं चलते।

याद रखने की बातें

1- जब हृदय से अल्लाह का भय निकल जाता है तो भलाई के मार्ग पर चलना मनुष्य के लिए कठिन हो जाता है।

2- अल्लाह के भेजे हुए रसूल जो उसकी ओर से निर्देष

लाते हैं : मनुष्य ही होते हैं फ़रिश्ते या अवतार नहीं होते।

3- अल्लाह तआला ने हर मनुष्य को बुद्धि और समझ दी है। उसे चाहिए कि वह इस बुद्धि से काम ले। बड़े–बूढ़ों की बातों पर आँखें बंद करके चलना उचित नहीं।

4- सच्ची बात पर जमना और हर स्थिति में सत्य बात कहना सबसे बड़ी नेकी है।

5- जिसकी समझ में यह बात आ जाए कि अल्लाह ही इस संसार का मालिक है और वही पूजा के योग्य है और उसी की आज्ञा का पालन करना चाहिए। उसे चाहिए कि वह अल्लाह से फिरे हुए मनुष्यों को अल्लाह की ओर बुलाए और इस कार्य के लिए हर प्रकार की विपत्तियाँ झेलने के लिए तैयार रहे।

6- अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए हर किसी की अप्रसन्नता सहन की जा सकती है। और अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और उसके दीन की ओर लोगों को बुलाने के उद्देश्य के लिए घर बार, जन्मभूमि, देश सब कुछ छोड़ा जा सकता है।

7- एक मोमिन (जो ईमान ला चुका हो) अपना धन सम्पत्ति, घर, जन्मभूमि सगे–सम्बन्धियों यहाँ तक कि स्वंय अपने जीवन तक से हाथ धो सकता है। परन्तु वह किसी भी स्थिति में स्वंय दीन से नहीं फिर सकता और न लोगों को दीन की ओर बुलाने से रूक सकता है। सच्चे मोमिन की पहचान यही है।

8- स्वंय मोमिन और मुस्लिम रहने के साथ–साथ अपनी

संतान को सच्चा मोमिन और मुस्लिम बना कर छोड़ना मोमिन की सब से बड़ी सफलता है।

9- मनुष्य के बिगाड़ का वास्तविक कारण अल्लाह को भूल जाना है। जब तुम लोगों में कोई बड़ी बुराई देखो तो सब से पहले मनुष्य के अंदर अल्लाह पर ईमान और आख़िरत (लेखा जोखा हो जाने के वाद का जीवन) के विश्वास को दृढ करो। जब तक यह ईमान पक्का न होगा लोग बुराइयों को न छोड़ेंगे

10- जो लोग अल्लाह के नबी की बातों को नहीं मानते और उसके लाए हुए निर्देष को ठुकरा देते हैं वह केवल उस समय तक बचे रहते हैं जब तक यह आशा रहती है कि उनमें से कुछ–न–कुछ लोग अवश्य सुधर जाएँगें। लेकिन जब यह सम्भावना नहीं रहती तो अल्लाह का अज़ाब आता है और वह मनुष्य मिटा दिये जाते हैं जो अल्लाह के आज्ञाकारी नहीं होते।

11- अल्लाह के अज़ाब से वे लोग बचाए जाते हैं जो स्वंय शिष्टता अपना लेते हैं और दूसरों को भी शिष्टता की ओर बुलाते रहते हैं।

हज़रत यूसुफ़

अलैहिस्सलाम

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो पुत्र थे, एक हज़रत इस्माईल (अलै0) जिनकी नस्ल मक्का नगर में बसी। और दूसरे हज़रत इस्हाक़ (अलै0) जो शाम के देश में बसे।

हज़रत इस्हाक़ (अलै0) के पुत्र का नाम हज़रत याक़ूब (अलै0) था। यह देश के एक नगर कन्आन में रहते थे। अल्लाह ने उनको बारह पुत्र दिये थे। जो यूसफ के सगे भाई थे, शेष भाई सौतेले थे। इन सब भाइयों में यूसुफ होशियार और शिष्ट स्वभाव के थे।

अभी यूसुफ (अलै0), कोई सोलह–सत्रह वर्ष के ही थे कि एक रात उन्होंने एक सपना देखा, सुबह उठकर उन्होने अपने पिता से कहा: "पिता जी ! रात मैं ने एक सपना देखा है। मैं ने देखा कि ग्यारह सितारे, सूर्य और चन्द्रमा मुझे सज्दा कर रहे हैं।" हज़रत याकूब ने इस सपने को सुनकर कहा, "पुत्र ! अपना सपना अपने भाइयों को न सुनाना। कहीं ऐसा न हो कि वह तुझे सताएँ मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि तेरा रब तुझे अपने काम के लिए चुन लेगा। तुझे अपना नबी बनाएगा, बड़ी समझ देगा, और जिस प्रकार तेरे दादा इस्हाक़ (अलै0) और परदादा (दादा के पिता) इब्राहीम (अलै0) को उसने रसूल बनाया था इसी प्रकार तुझ पर भी वह अपनी कृपा करेगा।"

हज़रत याक़ूब (अलै0) कुछ तो वैसे ही अपने सब पुत्रों में यूसुफ (अलै0) को सब से अधिक चाहते थे, क्योंकि वह बचपन से नेक और बड़े बुद्धिमान थे। अब इस सपनों के बाद तो उन्हें यह मालूम हो गया था कि उनके बाद नबुवत के काम को (संदेशक का पद) अल्लाह तआला हज़रत यूसुफ़ (अलै0) से लेने वाला है। इस लिए और भी अधिक प्यार करने लगे थे। दूसरे भाइयों को यह बात नहीं भाती थी, वह उन्हें देखकर जलते थे।

अरब में उस समय वही परिवार बड़ा माना जाता था जिसके पुत्र, पोते, भाई और भतीजे, शक्तिवान हों, ऐसे परिवार को कोई न छेड़ता था या और सब पर उसकी धाक जमी रहती थी। इसलिए शक्तिवान पुत्रों को लोग बहुत चाहते थे।

यूसुफ़ (अलै0) के भाइयों का कहना था कि जब हम सब यूसुफ़ (अलै0) से अधिक शक्ति रखते हैं तो किसी बुरे समय पर हम ही काम आ सकते हैं। निर्बल और अकेले यूसुफ़ से क्या हो सकता है, इस लिए पिता जी को चाहिए कि वह हमें सब से अधिक प्रेम करें। हमारी तुलना में यूसुफ़ (अलै0) को चाहना हमारा अपमान है।

एक दिन सब भाई इकठ्ठे हुए और बोले, ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे पिता जी तो बिल्कुल बहक गए हैं उनको चाहिए था कि हमारा मान बढाएँ। हम एक पूरा जत्था हैं हमें छोड़कर यूसुफ़ (अलै0) को चहना बहुत ही अनुचित बात है। क्यों न ऐसा करें कि यूसुफ़ को कहीं लेजाकर मार डालें या उसे कहीं दूर छोड़ आएं, जब यूसुफ़ न होगा तो फिर पिताजी हमको ही चाहेगें। उनमें से एक ने कहा, "नहीं यूसुफ़ (अलै0) को जान से तो न मारो बल्कि जंगल में ले जाकर किसी अंधे कुएं में डाल दो । कोई आता जाता क़ाफ़िला उसे निकाल कर ले जाएगा।

यह बात सब को उचित लगी और उन्होंने जाकर अपने पिता से कहा :–"पिता जी ! यह क्या बात है कि आप यूसुफ़ (अलै0) को कभी हमारे साथ नहीं भेजते ? क्या आपको हम पर विश्वास नहीं है ? हम तो उसका भला चाहने वाले हैं। कल उसे

भी हमारे साथ भेज दीजिए। जगंल की कुछ सैर कर लेगा, और कुछ खेल–कूद कर अपना मन बहलाएगा। और हम तो इसकी रखवाली के लिए वहाँ उपस्थित रहेंगे ही।"

पिता ने कहा, "इसे तुम्हारे साथ भेजते हुए मुझे बड़ी चिंता होती है मुझे भय है कि कहीं तुम कुछ लापरवाही करो और उसे भेड़िया खा जाए।"

उनके पुत्र बोले, "हम तो एक पूरा जत्था हैं, अगर हमारे होते हुए यूसुफ़ (अलै0) को भेड़िया खा जाए तो हम फिर किसी काम के नहीं हुए।" इसी प्रकार बातें बनाकर उन्होने पिता को सहमत कर लिया। और एक दिन वह यूसुफ़ (अलै0) को लेकर जंगल की ओर चले। इन सब ने यह निश्चय कर ही लिया था कि यूसुफ़ (अलै0) को किसी अंधे कुएँ में डाल आएँगें। जब जंगल में पहुँचे तो उन्होने यूसुफ़ (अलै0) को पकड़ कर एक अंधे कुएँ में धकेल दिया।

उस समय अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से हज़रत यूसुफ़ (अलै0) का साहस बढ़ाया और उनके मन में यह बात डाली कि कभी–न–कभी ऐसा अवसर भी आएगा कि यूसुफ़ (अलै0) अपने भाइयों को उनके इस दुष्ट व्यवहार की याद दिलाएँगें। भाइयों को क्या मालूम था कि अल्लाह की ओर से यूसुफ़ के मन का साहस बढ़ाने के लिए क्या प्रबंध हो रहा है, और यह कि आज वह जो कुछ कर रहें है कल इसका क्या परिणाम निकलने वाला है।

कुएँ में धकेलने से पूर्व उन्होने हज़रत यूसुफ़ (अलै0) का कुरता उतार लिया था। इस कुरते को झूठ मूठ किसी पशु के रक्त से रंग लिया । और रात को जब घर लौटे तो पिता के पास रोते – पीटते गए और बोले "पिताजी ! हम सब तो दौड़–भाग में लग गए और यूसुफ़ (अलै0) को हमने अपने सामान के पास बैठा दिया, इतने में भेड़िया कही से निकल आया और वह यूसुफ़ (अलै0) को खा गया। यह देखिए रक्त में डूबा हुआ उसका कुरता।"

हज़रत याकूब (अलै0) ने जब यह सुना तो बात उनके दिल को न लगी। वह बोले, हो न हो यह तुमने कोई शरारत और धोखा किया है। मेरा मन नहीं मानता कि तुम जो कुछ कह रहे हो वह ठीक ही है। मेरे लिए तो धैर्य रखना ही उचित है और जो कुछ तुम कह रहे हो उसके लिए तो बस मैं अल्लाह से सहायता माँगता हूँ और बस।"

खुदा का करना देखो जब हज़रत यूसुफ़ (अलै0) के भाई उन्हें कुएँ में डाल कर चले गए तो उधर से एक काफ़िला गुज़रा। उन्होंने अपने लोगों को कुएँ पर पानी भरने के लिए भेजा। उसने डोल डाला तो क्या देखता है कि कुएँ में एक बालक है। वह वहीं से चिल्लाया, "लो बधाई हो, यहाँ तो एक बालक मिला।"

क़ाफ़िले वालों ने हज़रत यूसुफ़ को कुएँ से बाहर निकाला और यह सोच कर कि उस बालक को कहीं ले जाकर बेच डालेंगे, उसे अपने पास छुपा लिया, उन्हें क्या मालूम था कि यह जो कुछ हो रहा है अल्लाह तआला की आज्ञा से हो रहा है, और उसे

हर बात का ज्ञान है।

क़ाफ़िले वाले मदियन से मिस्र जा रहे थे, वह हज़रत यूसुफ़ (अलै0) को मिस्र ले गये। और वहाँ जाकर थोड़े से दामों में कौड़ियों के मोल आप (अलै0) को बेच डाला। उन्हें हज़रत यूसुफ़ (अलै0) से इससे अधिक लाभ उठाने की आशा ही न थी।

मिस्र के राजा का एक बहुत बड़ा मंत्री था। उसका नाम फ़ौतीफ़ार था। यह राजकोष का सब से बड़ा अधिकारी था। उसे 'अज़ीज़' कहते थे। उसने हज़रत यूसुफ़ को क़ाफ़िले वालों से मोल ले लिया। हज़रत यूसुफ़ को देखकर उसने समझ लिया था कि यह लड़का किसी उच्च परिवार से सम्बन्ध रखता है और इन क़ाफ़िले वालों के हाथ कही से लग गया है। फिर उसने आपकी बातों को सुन कर भी यह पता लगा लिया कि आप बड़े बुद्धिमान हैं। अज़ीज़ के कोई पुत्र न था उसने अपनी पत्नी से कहा:

"इस बालक को भली प्रकार से रखना, हो सकता है कि यह हमारे लिए लाभदायक हो या इसे हम अपना लेपालक (दत्तक पुत्र) बना लें।"

उस समय हज़रत यूसुफ़ (अलै0) कोई अठारह वर्ष के थे । अज़ीज़ ने थोड़े ही दिनों में अपने घर के सारे अधिकार आप (अलै0) को सौंप दिए। अपनी संपत्ति का कारोबार और उसकी देख भाल सब कुछ उनके सुपुर्द कर दिया।

अब तक हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने गाँव में जीवन व्यतीत किया था। और आप में वह सारे गुण पाए जाते थे जो गाँव के

रहने वालों में होते हैं । फिर आपने नबियों के परिवार में आँख खोली थी। खुदा की पूजा और शिष्टता आप में कूट–कूट कर भरी थी। गाँव की खुली हवा में रहने के कारण आपका स्वस्थ बहुत अच्छा था। अब अल्लाह तआला ने आपको एक ऐसे परिवार और ऐसे देश में पहुँचा दिया जो उस समय अपने रहन सहन में बहुत अच्छा था जहाँ एक अच्छा शासन स्थापित था। फिर आप को रहने–सहने के लिए ऐसा घराना मिला जहाँ आप बड़ी असानी से शासन चलाने, और देश की व्यवस्था का काम सीख सकते थे। ऐसा मालूम होता है कि आगे चलकर हज़रत यूसुफ़ (अलै0) से जो काम अल्लाह तआला को लेना था उसके लिए आपको तैयार किया जा रहा था।

अल्लाह की कृपा देखो, इस प्रकार एक ओर तो विदेश में हज़रत यूसुफ़(अलै0) को रहने–सहने का इतना अच्छा ठिकाना मिल गया। दूसरी ओर आपकी ट्रेनिंग का ऐसा प्रबन्ध हो गया जो अच्छे राजकुमारों ही के लिए हो सकता है।

सच है अल्लाह तआला अपना काम करके रहता है, परन्तु बहुत से लोग इस बात का ज्ञान नहीं रखते कि उसके काम में कौन –सी मसलेहत (ऐसी कोई गुप्त भलाई जो सहसा जानी न जा सके) छुपी हुई है।

हज़रत यूसुफ़ (अलै0) अज़ीज़ के घर रहते रहे और बढ़–चढ़कर भली प्रकार से जवान हो गए। अज़ीज़ की पत्नी का नाम जुलैख़ा था। वह अच्छी युवती नहीं थी। एक दिन जब अज़ीज़ घर पर नहीं था उसने हज़रत यूसुफ़ (अलै0) को बुरी नीयत

से एक कमरे में बंद कर लिया। और उनसे बोली, "आ मेरे पास आ जा।"

हज़रत यूसुफ़ ने फ़रमाया "ख़ुदा की पनाह ! मेरे रब ने तो मुझे ऐसा अच्छा ठिकाना और ऐसा सम्मान दिया और मैं ऐसा बुरा काम करूँ। मुझ से कभी ऐसा काम न होगा – मेरा रब पापियों को कभी सफलता प्रदान नहीं करता।

यह सुनकर वह युवती हज़रत की ओर बढी, और अगर हज़रत यूसुफ़ की समझ में वह बात न आ जाती जो उन्होंने जुलैख़ा की नीयत ख़राब देखकर पहले ही कह दी थी तो हो सकता था कि वह भी उस यूवती की ओर बढ़ जाते, परन्तु अल्लाह तआला ने उन्हें बुरी और गन्दी बातों से बचा लिया और वह ऐसी कड़ी परीक्षा में उर्त्तीण हो गए। और क्यों न होते, हज़रत यूसुफ़ (अलै0) तो अल्लाह के उन चुने हुए भक्तो में से थे जिनको वह अपना रसूल बना कर भेजता है।

जब हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने उस औरत को अपनी ओर बढ़ते हुए देखा तो वह द्वार की ओर भागे, किन्तु जुलैख़ा भी बड़ी निर्लज्ज थी। वह भी उनके पीछे–पीछे लपकी और पीछे से उनका कुरता पकड़ लिया। हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने जो बलपूवर्क अपने आप को छुड़ाना चहा तो कुरता फट कर ज़ुलैख़ा के हाथ में रह गया और आप द्वार खोल कर भागे। ज़ुलैख़ा भी पीछे – पीछे दौड़ी। परन्तु जैसे ही दोनो द्वार से बाहर निकले, अज़ीज़ से सामना हो गया, यह देखकर जुलैख़ा सटपटा गई और घबराकर झट से बोल उठी :

इस व्यक्ति को क्या दँड दिया जाए जो तेरी पत्नि के साथ बुरी नीयत करे और फिर स्वंय कहने लगी :

"इसके सिवाय और क्या दंड दिया जा सकता है कि इसे जेलख़ाने में बन्द कर दिया जाए– या इसे ऐसा कड़ा दंड दिया जाए कि सदैव इसे याद रखे।

जब हज़रत यूसुफ़ ने यह सुना तो बोले, "नहीं, यही मुझे बहका रही थी लेकिन मैं सहमत न हुआ।

इतने में ज़ुलेख़ा के परिवार का ही एक व्यक्ति वहाँ आ पहुँचा। हो सकता है कि वह पहले से जानता हो कि जुलैख़ा कैसी स्त्री है। वह देखते ही पूरी बात समझ गया। और उसने बड़ी समझदारी की बात कही। वह बोला :

"यूसुफ़ की क़मीज़ (कुरता) देखो, अगर वह आगे से फटा है तो जुलैख़ा सच्ची है और यह झूठा है। और यदि क़मीज़ पीछे से फटी है तो स्त्री झूठी है और यह सच्चा।" बात स्पष्ट है यदि यूसुफ़ (अलै0) का क़मीज़ सामने से फटा होता तो उससे पता चल जाता कि यूसुफ़ (अलै0) ही स्त्री की ओर बढे होंगे और उसने हटाया होगा। और इस खींचा तानी में क़मीज़ आगे से फट गयी होगी । परन्तु जब क़मीज़ पीछे से फटी है तो इससे पता चलता है कि यूसुफ (अलै0) भागे होंगे और इस स्त्री ने उन्हें पकड़ने की चेष्टा की होगी। फिर एक बात और भी थी , अगर दोष हज़रत यूसुफ़ का होता तो कपड़े जुलैख़ा के फटते और उसके शरीर पर कुछ नोच– खसौट के चिन्ह होते और जब मामला

इसके विपरीत है तो बात बिल्कुल स्पष्ट रूप से समझ में आती है। इस गवाही को सुन कर अज़ीज़ पूरी बात समझ गया। और उसने अपनी पत्नि को डाँट कर कहा, " यह सारी शरारतें तुम्हारी हैं, सच तो यह है कि तुम औरतों की चालें बड़ी ख़तरनाक होती हैं फिर उसने हज़रत यूसुफ़ (अलै0) से कहा, "यूसुफ़ (अलै0) ! चलो जाने भी दो।" और पत्नि से बोला, "जा यूसुफ़ से क्षमा माँग भूल तेरी ही है।"

जुलेख़ा ने हज़रत यूसुफ़ के साथ जो कुछ किया उसका चर्चा सारे नगर में फैल गया औरतों ने यह बात सुनकर कहा, "अज़ीज़ की पत्नि अपने दास के प्रेम में अँधी हो रही है। हम तो जानें वह बड़ी मूर्खता में फंस गई है।" जब जुलेख़ा ने यह बातें सुनीं तो उसे बड़ा क्रोध आया। उसने एक दिन उन औरतों को खाने पर बुलाया और तकियेदार गद्दों पर बैठाया। हर एक के सामने कुछ फल खाने को रख दिए और साथ ही फल काटने के लिए चाक़ू भी रख दिये, जब सब औरतें फल काटने लगीं तो जुलेख़ा ने यूसुफ़ को वहाँ बुला लिया। औरतों ने जो उन्हें देखा तो भौंचक्की रह गयीं। "फल काटने के बदले अपने हाथ काट लिए और बोलीं –"अल्लाह –अल्लाह यह तो मानव नहीं फरिश्ता है।"

इस पर अज़ीज़ की पत्नी ने कहा, देखा तुमने ! यह है वह जिसके बारे में तुम मुझे बदनाम कर रही थीं । मैं ने इसे बहुत फुसलाया मगर यह बच निकला। अब यदि यह मेरा कहना न मानेगा तो मैं इसे जेल में सड़ा दूँगी, और इसे बहुत अपमानित

होना पड़ेगा।" देखा आपने, उस समय मिस्र की औरतें कैसी निर्ल्लज थीं। आज यूरोप वालों को उसपर बड़ा अभ्मिान है कि उन्होंने स्त्रियों को ऐसा स्थान दिया है, कि वह भी पुरषों के समान हैं। परन्तु देखिए, मिस्र की स्त्रियाँ कितनी स्वतन्त्र थीं। सत्य तो यह है कि शैतान के चेले हर युग में कुछ–न–कुछ एक से रहे हैं।

हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने जब जुलैख़ा के बुरे विचार सुने तो बोल उठे, "ऐ मेरे रब ! मुझे जेल प्रिय है परन्तु वह काम मुझ से न होगा जिसके लिए यह मुझे बुलाती है, ऐ मेरे मालिक ! यदि तूने मुझे उनकी चालों से न बचाया तो मुझे भय है कि कहीं मैं उनमें फंस न जाऊँ और इस प्रकार मैं भी मूर्खो में से हो जाऊँ।"

यह थे हज़रत यूसुफ़ (अलै0) –भरपूर यौवन का समय, उसपर नगर के बड़े–बड़े परिवारों की स्त्रियों का इस प्रकार इन पर डोरे डालना और उन्हें पाप के लिए उकसाना। मगर वह नेकी के रास्ते पर जमे रहे। ऐसे बुरे लोगो में रहकर भी वह नेक ही रहे। अल्लाह से भयभीत होकर पाप के निकट भी न गये। जब कोई शिष्ट बनना चाहता है और शिष्टता के मार्ग पर चलने का निर्णय कर लेता है तो अल्लाह तआला भी उसकी सहायता करता है। हज़रत यूसुफ़ (अलै0) की प्रार्थना अल्लाह ने सुन ली और उन्हें बुरी स्त्रियों के जाल से बचा लिया। सत्य तो यह है कि वही सब की सुनता है और सब ज्ञान रखता है।

निंदा के डर से बचने और हज़रत यूसुफ़ (अलै0) को

दुख देने के लिए उन लोगों ने उन्हें बंदी बना लिया। लेकिन नगर के उच्च परिवार की स्त्रियाँ जानती थीं कि वह पवित्र हैं। इस प्रकार हज़रत यूसुफ़ (अलै0) की नेकी और शिष्ट विचार का चर्चा सब लोगों में हो गया। और सब ने यह जान लिया कि वह कितने अच्छे और कैसे नेक थे।

आगे चलकर हज़रत यूसुफ़ (अलै0) को जो कार्य करना था, और मिस्र वालों तक जिस प्रकार अल्लाह का संदेश पहुँचाना था इसके लिए इस बात की बड़ी आवश्यकता थी कि लोग उन्हें जान लें और उनकी शिष्टता और ख़ुदा से उनके प्रेम की भली प्रकार से चर्चा हो जाए।

जेल ख़ाने में हज़रत यूसुफ़ (अलै0) के साथ दो युवक और प्रविष्ट हुए। उनमें से एक राजा को शराब (मदिरा) पिलाने वाला था, और दूसरा बावर्चीख़ाने (रसोईघर) का अधिकारी। दोनों को किसी अपराध के दंड में राजा ने जेल भेज दिया था।

एक दिन उन युवकों में से एक बोला : मैं ने एक सपना देखा है। मैं ने देखा कि मैं शराब बना रहा हूँ।"

दूसरा बोला, " मैं ने भी सपना देखा है, मैं ने देखा कि मेरे सर पर रोटियाँ रखी हैं और चिड़ियाँ उसमें से रोटियाँ नोच–नोच कर लिए जा रही हैं।"

दोनो ने हज़रत यूसुफ़ से कहा " आप हमें इस सपने का अर्थ बताइये। आप हमें बड़े नेक मालूम होते हैं।

हज़रत ने फ़रमाया, "तुमको प्रतिदिन जो भोजन मिलता है उसके मिलने से पूर्व मैं बता दूंगा कि तुम्हारे सपने का अर्थ क्या है। यह ज्ञान मुझे मेरे रब ने दिया है। बात यह है कि मैंने उनलोगों का मार्ग छोड़ दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाए और जो आख़िरत के जीवन को अस्वीकार करते हैं। मैंने तो अपने पूर्वजों हज़रत इब्राहीम (अलै0) हज़रत इस्हाक़ (अलै0) और हज़रत याक़ूब (अलै0) के दीन (धर्म) को स्वीकार कर लिया है। हमारा यह काम नहीं है कि हम अल्लाह के साथ किसी को उसका साझी बनाएँ। हम पर और सारे लोगों पर उसकी यह सबसे बड़ी कृपा है कि उसने हमें अपने दीन का रास्ता दिखाया। उसने हमें अपना बंदा बनाया और अपने सिवाय सबकी दासता से हमारी गर्दनों को छुड़ाया। जो लोग अल्लाह की दास्ता को स्वीकार नहीं करते फिर उन्हें हर किसी का दास बनना पड़ता है। परन्तु बहुत से लोग इस उचित और सत्य बात को जानते नहीं। वह यह भूल जाते हैं कि वह तो केवल एक अल्लाह के बंदे हैं। इसीलिए वह हर एक के दास बन जाते हैं ।

ऐ मेरे जेल के साथियो ! तुम यह विचार करो कि बहुत सारे मालिकों के आगे नाक रगड़ना और हाथ जोड़ना अच्छा है या एक मालिक की दास्ता अच्छी है। ऐसा मालिक जो अकेला है और हर प्रकार की शक्ति रखता है। उसको छोड़कर तुम जिस किसी की भी बंदगी (भक्ति पूर्वक ईश्वर की वंदना) कर रहे हो वह उसके सिवाय और क्या है कि तुमने और तुम्हारे बड़ों ने कुछ नाम रख लिए है और तुम उनको ही देवी–देवता

मान कर उनकी पूजा करने लगे हो, जो कुछ तुम कहते और करते हो, उसके लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ कोई प्रमाण तो तुम्हारे पास है नहीं।

याद रखो। शासन केवल अल्लाह का है। आज्ञा देने का अधिकार केवल उसी को है। उसने यह आज्ञा दी है कि उसके सिवाय किसी दूसरे की बंदगी न की जाए। जीवन व्यतीत करने का केवल मार्ग ही यही है। मगर बहुत से लोग इस बात को नहीं जानते।

ऐ मेरे जेल के साथियो ! अब सुनो तुमने जो सपना देखा है उसका अर्थ यह है कि "तुम में से एक तो अपने मालिक अर्थात् मिस्र के राजा को शराब पिलाएगा और दूसरे को फाँसी पर चढ़ा दिया जाएगा। और चिड़ियाँ उसका सिर नोंच–नोंच कर खाएँगी। लो हो गया निर्णय इस बात का जो तुम पूछ रहे थे।"

देखा आपने हज़रत यूसुफ़ अलै0 ने अपने जेल के साथयों से क्या बात–चीत की, और किस प्रकार बात में बात निकाल कर तौहीद (अल्लाह को एक मानने) का पाठ पढाया। इस पाठ में हम सब के लिए बड़ा उपदेश है।

फिर हज़रत यूसुफ़ अलै0 ने एक व्यक्ति से जो राजा को शराब पिलाने वाला था कहा कि, "जब तुम राजा के पास जाना तो उसे मेरा समाचार भी देना।" परन्तु वह यह बात भूल गया और हज़रत यूसुफ़ कई वर्ष तक जेल में ही पड़े रहे।

एक दिन राजा ने कहा, "मैने एक सपना देखा है कि

सात गाएँ मोटी हैं उनको सात दुर्बल गाएँ खा रही हैं और अनाज की सात बाली हरी हैं और सात सूखी। ऐ मेरे मंत्रियो ! यदि तुम सपने का अर्थ बताना चाहते हो तो बताओ कि मेरे इस सपने का अभिप्राय क्या है ? "

लोगों ने कहा, "यह तो कुछ यूँही से सपने हैं, और ऐसे सपनों का अर्थ तो हम कुछ जानते नहीं।"

उन दो वंदीयों में से जो एक बच गया था उसे इतने दिनों के बाद आज वह बात याद आई, उसने पहले तो राजा से हज़रत यूसुफ़ के बारे में बात की, और फिर आपबीती (वह घटना जो अपने ऊपर घट चुकी हो) सुना कर बोला :

"मुझे यूसुफ़ (अलै0) के पास भेज दीजिए, मैं अभी इस सपने का अर्थ आपको बताता हूँ।" राजा ने उसे हज़रत यूसुफ़ (अलै0) के पास भेज दिया, उसने जाकर कहा, "ऐ यूसुफ़ (अलै0) मुझे बताओ इस सपने का क्या अर्थ है ? सात मोटी गाएँ हैं, उन्हें सात दुर्बल गाएँ खा रही हैं। और सात बाली हरी हैं और सात सूखी हैं मै अभी जाकर उन लोगों को सपने का अर्थ बताता हूँ। मुझे आशा है कि वह यह सुनकर जानेंगें कि तुम कैसे अच्छे स्वभाव के व्यक्ति हो।" हज़रत यूसुफ़ ने कहा,

"तुम लोग सात वर्ष तक भली प्रकार खेती करोगे, अन्न और फल का बहुत अधिक उत्पादन होगा। तुमको चाहिए कि इन वर्षों में तुम जो कुछ थोड़ा सा खा लो सो खा लो, उसके पश्चात अपनी सारी उपज को बचा कर रखो और अन्न को बलियों में

ही रहने देना क्योंकि उसके बाद के सात वर्ष बड़े कठिन आएँगे। उपज बहुत कम होगी और तुमको वही खाना पड़ेगा जो तुम पहले से इकट्ठा करके रख लोगे। उसके पश्चात एक वर्ष ऐसा आएगा कि फिर अच्छी वर्षा होगी तुम्हारी खेती भली प्रकार फूले फलेगी और बड़ी अच्छी उपज होगी।"

राजा ने जब अपने सपने का अर्थ सुना तो उसने कहा, "यूसुफ़ (अलै0) को मेरे पास लाओ।" परन्तु जब राजा के सेवक यूसुफ़ (अलै0) को लाने जेलख़ाने पहुँचे तो उन्होंने कहा "जाओ अपने मालिक के पास जाओ और कहो कि पहले यह बात स्पष्ट हो जाना चाहिए कि मुझे बंदी क्यों बनाया गया ? इस विषय में उन स्त्रियों से पूछ–ताछ की जाए जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे। मेरा रब तो उनके छल–कपट का ज्ञान रखता है। परन्तु तुम लोंगो को भी मालूम हो जाना चाहिए कि मामला क्या था ?"

हज़रत यूसुफ़ का यह संदेश सुनकर राजा ने इस विषय में छान बीन की और उन स्त्रियों से पूछा कि "जब तुमने यूसुफ़ (अलै0) को फुसलाना चाहा तो तुमने उनको कैसा पाया ?" सब ने एक साथ गवाही दी।" अल्लाह–अल्लाह ! हमने यूसुफ़ (अलै0) में तनिक भी बुराई नहीं देखी।"

जब अज़ीज़ की पत्नि जुलैख़ा को इस छान बीन का ज्ञान हुआ तो उसे भी कहना पड़ा "अब तो सत्य खुल ही गया, मैंने यूसुफ़ को फुसलाने की चेष्टा की थी और उस पर डोरे डाले थे, सत्य तो यह है कि वह बिल्कुल सच्चा और पवित्र है।"

यह सुनकर हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने फ़रमाया, "इस छानबीन से मेरा अभिप्राय यह था कि अज़ीज़ को पता चल जाए कि मैंने उसके विषय में छुपकर उसके साथ कोई छल नहीं किया । मैं जानता हूँ कि जो कोई छल करता है, अल्लाह तआला उसकी चालों को सफल नहीं करता। मैं यह तो नहीं कहता कि मेरा जीवन हर प्रकार की बुराइयों से बिल्कुल पवित्र है। मनुष्य की इच्छाएँ तो उसे बुरी बातों के लिए उकसाती हैं। परन्तु जिस किसी पर मेरा रब कृपा करता है वह अवश्य बुराई से बच सकता है। मेरा मालिक तो बड़ा ही कृपालु और क्षमा करने वाला है।"

राजा ने जब यह बातें सुनीं तो कहा, "अच्छा यूसुफ़ (अलै0) को मेरे पास ले आओ, मै चाहता हूँ कि मैं उसे अपने विशेष कार्यों के लिए चुन लूँ और उसे कोई विशेष स्थान दे दूँ।"

जब हज़रत यूसुफ (अलै0) राजा के पास गए और उससे बात–चीत हुई तो उसने कहा, "आप तो हमारे लिए बड़े आदरणीय हैं और हम आप पर पूरा–पूरा विश्वास रखते हैं । हम चाहतें है कि देश की भोजन सामग्री का प्रबन्ध आप ही अपने हाथ में ले लें।"

हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने फ़रमाया, "देश का सारा ख़ज़ाना (कोष) मेरे हाथ में दे दिया जाय, मैं जो चाहूँ सो करूँ। मैं देश और देश वासियों की देख–भाल कर सकता हूँ। और यह भी जानता हूँ कि यह काम कैसे किया जायगा।"

राजा इस बात पर सहमत हो गया। इस प्रकार अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ (अलै0) के हाथ में मिस्र का शासन दे दिया। उनको यह अधिकार मिल गया कि सारे देश में जो चाहें करें। यह है अल्लाह का दान। वह जिसे चाहता है और जो कुछ चाहता है देता है और सत्य तो यह है कि उसके यहाँ नेक लोगों का अच्छा बदला कभी मारा नहीं जाता, रह गया अख़िरत् का बदला जो मोमिन के लिए सच्चा बदला है तो वह बहुत ही अच्छा है उनलोगों के लिए जो अल्लाह पर ईमान लाते हैं और उसकी अप्रसन्नता से बचते हुए उसके आदेशों पर चलते हैं।

हज़रत यूसुफ़ के हाथ में सारे देश का प्रबन्ध आ गया। सात वर्ष तक उन्होने जमकर खेती कराई और अनाज बचा–बचा कर रखा। उसके बाद जब सूखा पड़ा और अनाज उत्पन्न नहीं हुआ तो उस जमा किए हुए अन्न ने काम दिया। लाखों व्यक्ति भूखों मरने से बच गए। दूर–दूर से लोग आते और मिस्र से अन्न ले जाते। एक दिन अन्न की तलाश में हज़रत यूसुफ (अलै0) के भाई भी मिस्र आए। हज़रत यूसुफ़ ने उन्हें देखते ही पहचान लिया, परन्तु उन्हें कुछ पता न था कि मिस्र का अज़ीज़ उनका भाई यूसुफ़ है। हज़रत यूसुफ़ (अलै0) के सगे भाई 'बिन यामीन' को उनके पिता ने घर पर ही रोक लिया था। राज्य की ओर से हर एक को नाप – तौल कर अन्न मिलता था ये न था कि ज़िसका जितना मन चाहे ले ले। इस कारण हज़रत यूसुफ़ (अलै0) के भाइयों को भी दस व्यक्तियों का अनाज मिला। और जब उन्होने अपने ग्यारहवें भाई और बूढ़े पिता के लिए अन्न माँगा तो हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने कह दिया कि अच्छा इस बार तो

दे देता हूँ परन्तु अब जो आना तो अपने भाई को लेकर आना। पिता बूढे हैं नहीं आ सक्ते तो भाई तो आ सकते हैं। उन्हें साथ लेकर आना।"

इधर हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने अपने नौकरों से कह दिया कि अनाज लेने के लिए यह लोग जो कुछ धन लाये थे वह उनके सामान में हीं छुपा कर रख दो, यह इसलिए कि जब हज़रत यूसुफ़ (अलै0) का मन अपने भाई को देखने के लिए बेचैन हो रहा था और वह चाहते थे कि वे लौट कर आएँ।

अब हज़रत यूसुफ़ (अलै0) के भाई घर पहूँचे तो उन्होने अपने पिता से सारी बात कह सुनाई और कह दिया कि अब अनाज उसी समय मिलेगा जब बिन यामीन हमारे साथ जाएँगें। आप हमारे साथ उन्हें अवश्य भेज दें हम उनकी देखभाल करेंगे।"

पिता जी बोले, "इससे पूर्व इसके भाई के बारे में तुम पर विश्वास कर चुका हूँ क्या अब फिर तुम पर विश्वास कर लूँ ? सत्य तो यह है कि रक्षा करने वाला तो केवल अल्लाह ही है। वही सब कृपा करने वालों से अधिक कृपालु है।"

अब जो उन्होने अपना सामान खोला तो देखा कि उनका धन तो उनको ही लौटा दिया गया था। यह देखकर वह बोले, "पिताजी ! लो देखो ! हमारा धन भी हमको लौटा दिया –और हमें क्या चाहिए। हम अब अवश्य जाएँगें और भय्या को भी साथ ले जाएँगें। उनकी रक्षा हमारा उत्तरदायित्व है –"

पिताजी बोले, "मैं उन्हें तुम्हारे साथ उस समय तक न

भेजूँगा जब तक तुम अल्लाह की सौगन्ध खा कर मुझको वचन न दो कि तुम इसे अवश्य साथ लौटा कर लाओगे। यह बात दूसरी है कि तुम सारे–के–सारे स्वंय ही कहीं घिर जाओ।"

जब भाइयों ने वचन दे दिया तो हज़रत याक़ूब (अलै0) बोले :

"हमारी इस बात का अल्लाह साक्षी है। और पुत्रों ! देखो जब तुम मिस्र की राजधानी में जाओ तो किसी एक द्वार से मत जाना। थोड़े–थोड़े बट जाना, और अलग–अलग द्वार से जाना। अल्लाह जो कुछ चाहे उससे तुम्हें बचा लेना तो मेरे वश में नहीं। असली राजा तो वही है। मैंने उसपर विश्वास किया है और हर किसी को उसी पर विश्वास करना चाहिए।

आपने देखा ? एक मोमिन बंदा किस प्रकार उपाय तो करता है परन्तु भरोसा केवल अल्लाह पर रखता है।

यूसुफ़ (अलै0) के भाई मिस्र में प्रवेश हुए। उसी प्रकार प्रवेश हुए जिस प्रकार उन के पिता ने समझा दिया था। परन्तु अल्लाह की जो आज्ञा थी वह होकर रही। उनका यह उपाय कुछ काम न आया। मोमिन (जो ईमान ला चुका हो) अपनी जैसी पूरी कोशिश करता है। मगर भरोसा अल्लाह पर करता है वह जानता है कि उसकी चेष्टा से अल्लाह का आदेश टल नहीं सकता। अल्लाह जो चाहता है वह होकर रहता है।

जब यह लोग हज़रत यूसुफ़ (अलै0) के पास पहुँचे तो उन्होने अपने भाई बिन यामीन को अपने पास बुलाया और उससे

कहा कि "मैं तुम्हारा भाई हूँ, अब चिंता की कोई बात नहीं। तुम मेरे साथ रहना। और उन सौतेले भाइयों ने अब तक तुम्हारे साथ जो कुछ किया है उसका शोक मत मनाओ।"

जब उनलोगों का सामान लद गया और उनके जाने का समय आ गया तो किसी ने चुपके से बिन यामीन के सामान में राजा का प्याला रख दिया। जब वह कुछ दूर निकल गए तो प्याले की खोज हुई -- प्याला बहुमूल्य था। राजसेवकों को बड़ी चिंता हुई, वह उन लोगों के पीछे दौड़े।

"तुम लोग चोर हो" इन बेचारों को क्या पता था। उन्होंने चकित होकर पूछा --"तुम्हारी क्या वस्तु खो गई है ?" वह बोला, "राजा का प्याला खो गया है और जो कोई उस प्याले को ढूँढ लाएगा उसे एक ऊँट भर अन्न मिलेगा और यह वचन मेरा है।

सब सौगन्ध खाने लगे, बोले, "तुम जानते हो, हम यहाँ उपद्रव करने नहीं आए थे और हम चोर नहीं हैं।"

राजा के नौकर बोले, "अच्छा अगर तुम झूठे निकले तो तुम्हें क्या दंड दिया जाए ?" उन्होने कहा, "जिसके सामान में से प्याला निकल आये वही इसके दंड में रोक लिया जाए। हमारे यहाँ दंड देने का यही नियम है।"

जब यह बात--चीत हो गई तो खोए हुए प्याले की ढूंढ मची। फिर अंत में बिन यामीन के सामान में से प्याला निकल आया। उन लोगों के अपने बताए हुए नियम के अनुसार बिन

यामीन रोक लिए गए।

हज़रत यूसुफ़ के लिए यह किसी प्रकार से भी उचित न था कि वह मिस्र के राजदण्ड के अनुसार अपने भाई को पकड़ते। वह तो नबियों के परिवार के थे। उनके लिए यही उचित था कि वह इस्लामी शरीअत (मुसलमानों का धर्मशास्त्र) को व्यवहार में लाते अल्लाह तआला ने उनकी सहायता की और राज सेवकों के मन में यह बात डाल दी कि वह चोर की सज़ा (दंड) स्वंय क़ाफ़िले वालो से पूछ बैठे। इस प्रकार एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गई कि यूसुफ़ (अलै०) को मिस्र के राजा के ग़ैरइस्लामी (मुसलमानों के धर्म से हट कर) नियम की सहायता भी न लेनी पड़ी और उनके भाई यामीन बंदी बना लिए गए। यह लोग मिस्र देश की प्रजा न थे और इस प्रकार इस बात की सुविधा थी कि इनके लिए राज्य के नियम के अतिरिक्त कोई दूसरा नियम काम में लाया जाए। सत्य है कि अल्लाह तआला जिस पर चाहता है उसी पर कृपा करता है। उसका ज्ञान तो सभी ज्ञानियों से अधिक है।

अब जो भाइयों ने देखा कि प्याला बिन यामीन के सामान से निकल आया, तो अपनी बात बनाने के लिए बोले, "इसने चोरी की तो क्या हुआ इसका तो भाई भी चोर था।"

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम यह बात सुन कर पी गए। और उनसे कुछ न कहा, अपने मन में कहा कि तुम बड़े ही बुरे लोग हो, मेरे मुँह पर मुझे चोर बता रहे हो, अल्लाह भली प्रकार से जानता है कि तुम कैसी बातें बना रहे हो फिर सब मिलकर

यूसुफ़ (अलै0) को मनाने लगे और उनसे बोले, "ऐ राजा ! इस बालक का पिता बहुत बूढ़ा है। आप कृपा करें इसके बदले हममें से किसी एक को रोक लें और इसे जाने दें। आपकी तो हमारे उपर बड़ी कृपा रही है।"

हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने कहा, "अल्लाह की पनाह यह कैसे हो सकता है कि हम किसी और को पकड़ लें, और इसे छोड़ दें जिसके पास से हमारी वस्तु निकली है। ऐसा करें तो हम से बड़ा अत्याचारी कौन ?"

यह बात सुनकर वह निराश हो गए और एक ओर जाकर आपस में परामर्श करने लगे। उनमें से जो सब से बड़ा था वह बोला कि, "देखो ! तुमने खुदा की कसम खाकर पिता को यह वचन दिया था और उससे पूर्व यूसुफ़ (अलै0) के विषय में जो कुछ तुम कर चुके हो उसे भी सामने रखो। इन परिस्थितियों में तो मैं टलूंगा नहीं जब तक कि हमारे पिता ही आज्ञा दें या अल्लाह तआला कोई और उपाय न निकाल दे। तुम अपने पिता के पास जाओ और कहो कि

"पिंताजी ! तुम्हारे पुत्र ने चोरी कर ली । हम ने तो आप से वही बात कही थी जिसका हम ज्ञान रखते थे। ग़ैब (परोक्ष जो सामने न हो) की बात हमें क्या मालूम। आपको विश्वास न हो तो उस बस्ती वालों से पूछ लीजिए जहाँ हम ठहरे थे। या उन क़ाफ़िले वालों से मालूम कर लीजिए जिनके साथ हम आए हैं, हम बिल्कुल सच्चे हैं।

इस बात-चीत के पश्चात यह लोग घर पहुँचे। अपने पिता से पूरी बात कह सुनाई। सब कुछ सुनकर उनके पिता बोले, "अच्छा तुमने एक और बड़ी बात को अपने लिए सरल बना लिया। तुम्हारे लिए बिन यामीन को चोर समझ लेना जैसे कोई बात ही नहीं। मैं तो धैर्य रखूंगा ही। क्या पता अल्लाह तआला दोनों को मेरे पास ले आए वह सब जानता है। उसके सारे काम में कोई-न-कोई भलाई छुपी रहती है।

फिर उन्होंने "हाय यूसुफ़ (अलै0) कह कर पुत्रों की ओर से मुख फेर लिया। फिर पुत्र के शोक में रोते-रोते उनकी आँखें सफेद पड़ गयी थीं और मन ही मन में इस दुख से घुट रहे थे। पुत्रों ने यह दशा देखी तो कहने लगे, "खुदा की कसम आप तो यूसुफ़ (अलै0) की याद में अपने आप को घुला-घुला कर मिटा लेंगें।"

यह सुनकर वह बोले, मैं तो अपने दुख दर्द दूर करने की प्रार्थना सिवाय अल्लाह के किसी से नहीं करता। और अल्लाह की बातों को जितना मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते मेरे बच्चों ! जाओ यूसुफ़ (अलै0) और उसके भाई की टोह लगाओ- अल्लाह की दया से निराश न हो। उसकी कृपा से तो काफ़िर ही निराश होते हैं।"

पिता के कहने पर हज़रत यूसुफ़ (अलै0) के भाई फिर मिस्र पहुँचे और मिस्र के राजसभा में पहूँचकर बोले, "ऐ अज़ीज़ हम और हमारे घर वाले बड़े कष्ट में है। हमारे पास जो कुछ बची-हुई पूँजी थी वह हम ले आए हैं। आप हमें पूरा अन्न दे

दें और हम पर दान पुण्य करें। अल्लाह तआला दानपुण्य करने वालों को अच्छा बदला देता है।"

हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने अपने घर वालों की जो यह दशा सुनी तो उनसे न रहा गया। बोले –

अच्छा तुम जानते हो, तुमने अपनी अज्ञानता में यूसुफ़ (अलै0) और उसके भाई के साथ क्या किया ?"

भाई यह सुनकर चौंक पड़े और बोले, "हायँ क्या आप ही यूसुफ़ हैं ?

"हाँ मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर बड़ी कृपा की। बात यही है कि जो कोई अल्लाह का आज्ञाकारी बन्दा हो और धैर्य के साथ कष्टों को झेलता रहे तो अल्लाह तआला के यहाँ ऐसे भले लोगों को बदला अवश्य मिलता है।"

भाई बोले, "ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह तआला ने हमारी तुलना में आपको बहुत ऊँचा किया है। सत्य तो यह है कि हम से बहुत बड़ी भूल हुई है।"

हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने कहा, "जाओ आज तुम्हारी कोई पकड़ धकड़ नहीं –अल्लाह तआला तुम्हें क्षमा करें वह सब कृपा करने वालों से बढ़कर कृपा करने वाला है। लो यह मेरा कुरता ले जाओ इसे पिता के मुँह पर डाल देना, उनकी आँखों में ज्योति आ जाएगी। और तुम सब घर वालों को लेकर यहाँ चले आओ।

जब यह लोग मिस्र से चले तो उनके पिता याक़ूब (अलै0) अपने घर बैठे–बैठे एक दिन बोले, " लोगो ! मुझे तो कुछ यूसुफ़ (अलै0) की सी सुगंध आ रही है कहीं तुम यह न कहना कि मैं बुढ़ापे में सठिया (बृद्धावस्था के कारण बुद्धि का काम न करना) गया हूँ।"

घर वाले वोले –"ख़ुदा की क़सम आप तो अभी तक उसी पुराने ख़ब्त (पागलपन) में पड़े हुए हैं।"

घर वालों की यह बातें सुनकर हज़रत याक़ूब (अलै0)चुप हो रहे। कुछ दिनों बाद क़ाफ़िला आ गया और शुभ समाचार लाने वाले ने हज़रत यूसुफ़ (अलै0) का कुरता उनके मुँह पर डाल दिया। कुरते का डालना था कि उनकी आँखे खुल गयीं। अब हज़रत ने फ़रमाया–"देखो ! मै तुम से कहता न था कि मुझे अल्लाह तआला ने उन बातों का भी ज्ञान दिया है जो तुम नहीं जानते।"

अब तो सब के सब कहने लगे, "पिता जी ! हमारी भूल क्षमा कर दीजिए। अल्लाह तआला से हमारे पाप क्षमा करने के लिए प्रार्थना करिए। हम सब से बहुत बड़ी भूल हो गई है।"

पिता ने कहा, "मैं अपने मालिक से तुम्हारी क्षमा के लिए प्रार्थना करूँगा। वह बड़ा कृपालु और क्षमा करने वाला है।

अब यह सारा क़ाफ़िला मिस्र की ओर चला। जब हज़रत यूसुफ़ (अलै0) को उनके आने का समाचार मिला तो वह उन्हें लेने के लिए शहर से बाहर आए। और जब यह लोग हज़रत

यूसुफ़ (अलै0) से मिले तो उन्होने अपने माता–पिता को बड़े आदर के साथ अपने पास बैठाया और अपने परिवार वालों से कहा कि "चलो वहाँ तुम अब सुख के साथ रहना।"

शहर में आने के पश्चात हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने अपने माता–पिता को राजगद्दी पर बैठाया। इस अवसर पर सब लोग झुक–झुककर हज़रत यूसुफ़ (अलै0) को ताज़ीम (आदर के साथ सलाम) करने लगे। यह देखकर हज़रत यूसुफ़ (अलै0) बोले।

"पिता जी ! यह है उस सपने का अर्थ जो मैं ने पहले देखा था। मेरे मालिक ने उसे सच कर दिखाया। यह उसका उपकार है कि उसने मुझे जेलख़ाने से निकाला और आप लोगों को जंगल से निकाल कर मुझसे मिला दिया। हालांकि शैतान ने तो मेरे और मेरे भाइयों के बीच फूट डलवा ही दी थी। सत्य तो यह है कि मेरा मालिक जिस प्रकार अपने कामों को पूरा करता है उसे कोई नहीं जान सकता। वह सब से अधिक विद्या रखने वाला और सब से बड़ा ज्ञानी है।"

उसके बाद हज़रत यूसुफ़ अलै0) ने अल्लाह तआला से प्रार्थना की। आपने कहा "ऐ मेरे मालिक ! तूने मुझे राज्य दिया और इतनी बुद्धि दी कि मैं बातों की थाह तक पहुँच सकूँ।

ऐ मेरे मालिक ! पृथ्वी व आकाश को बनाने वाला तू ही है। संसार और आख़िरत में मेरा काम बनाने वाला है। तू मेरा अंत इस्लाम पर करना और मुझे अपने नेक बंदो के साथ मिला देना।"

याद रखने की बातें

1. मनुष्य का ज्ञान बहुत थोड़ा है। वह बहुत–सी चीज़ों को बुरा जानता है परन्तु कभी वही उसके लिए लाभ पहुँचाने वाली होती हैं और बहुत–सी–चीज़ों को अपने लिए लाभदायक समझकर उनकी ओर लपकता है परन्तु वही उसके लिए बड़ी हानि का कारण बन जाती हैं।

2. कई विपत्तियाँ किसी बड़ी सफलता का कारण बन जाती हैं। परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य अल्लाह की प्रसन्नता के लिए उन्हें धैर्य के साथ सहन करे और हर अवस्था में उसके आदेशों पर चलता रहे।

3. यदि एक ओर खुदा की आज्ञा को टालने पर भी व्यक्ति को हर प्रकार का विलास व आराम मिलता हो और दूसरी ओर उसके आदेशों पर चलने में विपत्तियाँ उठाना पड़े तब भी एक मोमिन बन्दा सुख चैन को ठुकरा देता है और अल्लाह की आज्ञा का पालन करते हुए कष्ट झेलने के लिए तैयार हो जाता है। क्योंकि उसे विश्वास हो जाता है कि वास्तविक सुख तो उस जीवन का सुख है जो सदैव रहने वाला है और इस संसार के कष्ट चाहे कितने ही अधिक क्यों न हों एक–न–एक दिन उनका अंत हो ही जाएगा।

4. अल्लाह अपने नेक बन्दों को आख़िरत में उनके कामों का अच्छा बदला देगा ही क़िन्तु वह कभी–कभी उनको संसार में भी सुख चैन और सम्मान देता है। मोमिन बन्दा संसार की

नेमतें पाकर और अधिक अल्लाह की ओर झुकता है और हर पल उसकी प्रसन्नता का ध्यान रखता है।

5. जो लोग संसार में नेकी फैलाना चाहतें हैं उनका अपना जीवन बुराइयों से पवित्र होना चाहिए। ऐसा पवित्र कि जब उनसे लोग मिलें तो पुकार उठें कि यह लोग कैसे भलें हैं।

6. लोगों को भली बात सुनाने के लिए और उन्हें उचित मार्ग पर लाने के लिए उचित अवसर पर ही बात कहनी चाहिए। और जब उचित अवसर मिल जाए तो फिर पूरी बात खोल कर कहनी चाहिए।

7. शरीअत (धर्मशास्त्र) के क़ानून की तुलना में मोमिन किसी दूसरे क़ानून को नहीं अपना सकता। विशेष रूप से वह लोग जो अल्लाह के दीन को स्थिर करने का निर्णय कर लें।

ग़ैब का ज्ञान सिवाए खुदा के किसी को नहीं हो सकता। यह बात और है कि अल्लाह तआला जब चाहता है अपने नबियों को या अपने दूसरे नेक बंदों को कोई बात बता देता है। आपने देखा, हज़रत याकूब (अलै0) लगभग बीस वर्ष तक पुत्र के लिए रोते रहे। उनमें यह शक्ति नहीं थी कि वह स्वंय ही हज़रत यूसुफ़ (अलै0) की पूरी अवस्था जान लेते। परन्तु जब अल्लाह तआला ने चाहा तो उनमें यह शक्ति आ गई कि इधर मिस्र से क़ाफ़िले वाले हज़रत यूसुफ़ का कुरता लेकर चले और उधर सैंकड़ो मील दूर घर बैठे उन्हें पुत्र की सुगन्ध आ गई।

9. मोमिन के जीवन का सबसे बड़ा काम नेकी फैलाना

और बुराई मिटाना है। वह कष्ट के दिनों में भी यह काम करता है। और बड़े–से–बड़े और अधिक–से–अधिक धन व सम्पत्ति पाकर भी इस ज़िम्मेदारी को नहीं भूलता। हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने जेलख़ाने में भी लोगों को तौहीद और आख़िरत की ओर आमन्त्रित किया। और शासन पाकर अपनी पूरी शक्ति अल्लाह का दीन स्थापित करने ही में लगाई।

10. अल्लाह के नेक भक्त अपने व्यक्तिगत शत्रुओं की भूल उस समय भी क्षमा कर देते हैं जब उनमें बदला लेने की पूरी–पूरी शक्ति होती है। वह अपने लिए किसी को दुख नहीं देते। लोगों को दण्ड देने के लिए उनका हाथ उसी समय उठता है जब ऐसा करना दीन के लाभ के लिए आवश्यक हो।

11. दुआ (प्रार्थना) मोमिन की सब से बड़ी शक्ति है। हज़रत यूसुफ़ (अलै0) की प्रार्थना पर फिर विचार करिये और यदि हो सके तो क़ुरआन पाक (अल्लाह की किताब) में इस प्रार्थना के वास्तविक शब्द पढ़ कर उनका अनुवाद देखिए। आप को मालूम होगा कि हर प्रकार की नेमतें पाने के बाद भी एक मोमिन का सम्बन्ध अपने अल्लाह के साथ कैसा होता है। आप इस दुआ को याद कर लीजिए।

हज़रत सुलैमान

अलैहिस्सलाम

हज़रत सुलैमान (अलै0) अल्लाह के नबी थे। आप के पिता का नाम हज़रत दाऊद (अलै0) है। वह भी अल्लाह के नबी थे–आपकी माताजी भी बड़ी नेक बीबी थीं। वह बचपन से हज़रत सूलैमान(अलै0) को अच्छी–अच्छी बातें सिखाती थीं–एक बार उन्होंने कहा, "बेटा सुलैमान (अलै0) रात भर न सोते रहा करो। जो व्यक्ति रात भर सोता रहता है और उठकर अल्लाह को याद नहीं करता, क़यामत के दिन उसकी नेकियाँ कम हो जाने का भय है।

अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान (अलै0) को बचपन से बहुत चतुराई और बुद्धि प्रदान की थी। एक बार आपके पिता हज़रत दाऊद (अलै0) एक मुक़दमें का न्याय कर रहे थे। हज़रत सुलैमान (अलै0) भी अपने पिता के पास बैठे थे। उस समय हज़रत की आयु लगभग ग्यारह वर्ष की थी।

मुक़दमा यह था कि एक व्यक्ति ने आकर शिकायत की कि एक दूसरे व्यक्ति की बकरियों ने मेरा सारा खेत चर लिया। और पैरों से कुचल कर नष्ट कर डाला। खेत वाले की जितनी हानि हुई थी वह लगभग उतनी ही थी जितनी कि बकरियाँ थीं। हज़रत दाऊद (अलै0) ने निणर्य किया कि यह बकरियाँ खेत वाले को उसकी हानि के बदले में दे दी जाएँ।

हज़रत सुलैमान (अलै0) भी मुकदमें के बारे में सुन रहे थे। मुकदमें का निर्णय सुनकर बोले, "पिताजी ! आप का न्याय तो बिल्कुल उचित है। खेत वाले की जो हानि हुई वह उसे अवश्य मिलनी चाहिए। परन्तु मेरे मन में एक इससे भी अच्छी युक्ति (तरकीब) आ रही है।"

हज़रत दाऊद (अलै0) ने फ़रमाया, "कहो बेटा ! वह कौन–सी युक्ति है ?" हज़रत सुलैमान (अलै0) ने फ़रमाया–

"बकरियों का यह गल्ला (झुंड) खेत वाले को दे दिया जाए। वह उनके दूध और उनसे लाभ उठाता रहे। और बकरियों के स्वामी से कहा जाये कि वह इस खेत को फिर से जोते और बोए और जब उपज तैयार होकर फिर से वैसी ही हो जाए जैसी नष्ट की गई है तो खेत वाले को उसका खेत और उसकी उपज देदे और अपनी बकरियाँ वापिस ले ले।"

हज़रत दाऊद (अलै0) को पुत्र का यह निर्णय बहुत अनुकूल लगा और उन्होंने इस निर्णय को स्वीकार कर लिया।

हज़रत दाऊद (अलै0) एक बहुत बड़े देश के शासक भी थे। उनकी मृत्यु के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान (अलै0) को अपना नबी बनाया और वही उस देश के शासक भी बने हज़रत सुलैमान (अलै0) का राज्य न केवल मानव पर था बल्कि अल्लाह तआला ने पक्षी, पशुओं, जिन्न (प्रेतात्मा) और यहाँ तक कि हवा तक को आपका आज्ञाकारी बना दिया था– हज़रत सुलैमान (अलै0) पशुओं की बोलियाँ भी समझते थे। यह

अल्लाह तआला की ओर से एक विशेष कृपा थी। आप जिन्नों से भी काम लेते थे और हवा से भी। हवा आप के तख़्त (गद्दी) को उड़ाकर पल के पल में कहीं से कहीं ले जाती थी। सुबह आप एक नगर में होते और शाम को दूसरे नगर में इतनी दूर चले जाते जितनी दूर एक व्यक्ति कहीं एक मास में जा सके। यह अल्लाह की शक्ति थी जिस अल्लाह ने आज साधारण मनुष्य को इतनी बुद्धि दी है कि वह हवाई जहाज़ (वायुयान) बनाकर संसार भर में उसे उड़ाता फिरे उसी अल्लाह के आदेश से हवा उस के नबी के संकेत पर उन्हें पल भर में कहीं--से--कहीं पहुँचा देती थी।

अल्लाह तआला ने मनुष्य को जन्म दिया है उसीने सभी पशुओं और संसार की हर वस्तु को बनाया है। उसी ने जिन्नों को भी जन्म दिया है। जिन्न एक ऐसा प्राणी है जिसे हम देख नहीं सकते। जिन्न भी अच्छे और बुरे होते हैं। जिन्नों के लिए भी अल्लाह के रसूलों का कहना मानना आवश्यक है। जो जिन्न अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाते हैं वह अच्छे होते है, जो ईमान नहीं लाते वह बुरे होते हैं।

अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान (अलै0) को जिन्नों का भी राजा बनाया था। जिन्न आपके आदेश को मानते थे। और ऐसे--ऐसे काम कर डालते थे जो मनुष्य के वश में नहीं थे। जिन्न गहरे--गहरे समुन्द्र में डुबकी लगाते और बहुमूल्य मोती निकाल कर लाते और हज़रत सुलैमान (अलै0) की सेवा में प्रस्तुत कर देते। वह उनके लिए बड़े--बड़े दुर्ग तैयार करते थे। युद्ध

के लिए शस्त्र बनाते थे। बड़ी–बड़ी टंकिया और बहुत बड़ी–बड़ी देगें बनाते थे। और ऐसे–ऐसे काम करते थे जो प्रायः मनुष्य के वश में न थे। हज़रत सुलैमान (अलै0) को अल्लाह तआला ने धन भी अत्यधिक दे रखा था। और धन होता भी क्यों न जिसकी आज्ञा का पालन मनुष्यों के अतिरिक्त जिन्न और पक्षी सब करते हों उसके पास किस वस्तु की कमी हो सकती है। परन्तु हज़रत सुलैमान (अलै0) ने अल्लाह के प्रदान किए हुए धन को सदैव अल्लाह का धरोहर समझा। निर्धन और निर्बल लोगों की आवश्यकताएँ उससे पूरी कीं। उस धन से कभी अपने ठाठ–बाट का सामान नहीं किया। न अपने लिए ऊँचे–ऊँचे भवन बनवाए और अपने सुख और विलास के लिए उस धन को उड़ाया। हज़रत सुलैमान (अलै0) अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए टोकरियाँ बना कर रूपए कमाते थे। और उसी से अपना काम चलाते थे। सच है कि धनवान होना बुरा नहीं। धनवान होकर धन को अपने सुख और विलास में उड़ाना बुरा है। धन–दौलत भी अल्लाह की नेमत है। जो कोई इस नेमत को पाकर अल्लाह को न भूले , निर्धन और दरिद्र व्यक्तियों के काम आए। और अल्लाह के दिए हुए धन को इसी प्रकार ख़र्च करे, जिस प्रकार अल्लाह की इच्छा हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत अच्छा व्यक्ति होता है।

हज़रत सुलैमान (अलै0) को अल्लाह तआला ने धन–दौलत प्रदान किया था वह उसे अधिकतर अल्लाह के दीन को फैलाने और निर्धन व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी करने में व्यय करते

थे। आपको घोड़ों से भी बड़ा प्रेम था। क्योंकि घोड़े अल्लाह के मार्ग में किए जाने वाले युद्ध में काम आते थे। आप के यहाँ बहुत अच्छी नसल के घोड़े पले हुए थे।

एक बार आपने उन्हें देखने के लिए मंगाया। आपको उन घोड़ों को शक्तिवान और स्वस्थ देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई थी। जब यह घोड़े जो हज़ारों की संख्या में थे आपके सामने आये तो उनको देखकर बहुत प्रसन्न हुए। कहने लगे, " इनसे प्रेम करना भी वास्तव में अल्लाह को याद करने के समान है।"

सत्य है कि एक मोमिन बंदा यदि धन से प्रम करता है तो इसलिए कि इस धन को अल्लाह के दीन के लिए ख़र्च करे और उस धन से निर्धन व्यक्ति की सहायता करे। ऐसे धन से प्रेम भी अल्लाह की पूजा है। यही बात हज़रत सुलैमान (अलै0) ने भी कही कि इन घोड़ों के प्रम को भी अल्लाह की याद ही कहना चाहिए।

थोड़ी देर में घोड़े वापस चले गए अब दिन छुप चुका था। परन्तु हज़रत सुलैमान (अलै0) ने उन को फिर वापस बुलाया। और इस बार प्रेम से उनकी पिंडलियों को मलने लगे, और उनकी गर्दनों को थपथपाने लगे। घोड़ों से इस प्रेम विषय में अल्लाह तआला ने .क़ुरआन पाक में फ़रमाया हैं। हज़रत सुलैमान (अलै0) का यह अंदाज़ अल्लाह तआला को बहुत अच्छा लगा कि वह उसके दीन के लिए जिहाद (जो युद्ध अल्लाह के लिए लड़ा जाए) में काम आने वाले घोड़ों का कितना सम्मान करते थे।

एक बार ऐसा हुआ कि हज़रत सुलैमान (अलै0) कहीं जा रहे थे। बहुत बड़ी सेना साथ थी। सेना में मनुष्य के अतिरिक्त जिन्न और पखेरू भी थे, सब–के–सब पंक्ति में बड़े अच्छे ढंग से चल रहे थे।

चलते–चलते यह सेना एक ऐसी घाटी के निकट पहुँची जहाँ अनगिनत चीटियाँ रहती थी। जब हज़रत सुलैमान (अलै0) की सेना निकट आ गई तो चीटियों के राजा ने उनसे कहा, "ऐ चीटियों ! तुम सब जल्दी–जल्दी बिलों में घुस जाओ हज़रत सुलैमान की सेना आ रही है। कहीं ऐसा न हो कि वह तुम को अपने पैरों से रौंद डाले और उसको पता भी न हो कि कितनी चीटियाँ मर गयीं।"

हज़रत सुलैमान (अलै0) को अल्लाह तआला ने ऐसा ज्ञान दिया था कि वह पखेरूओं पशुओं की बोलियाँ समझ लेते थे। हज़रत ने चीटियों के राजा की यह बात सुन ली यह बात सुनकर आप को बड़ी प्रसन्नता हुई। और आप मुसकुरा दिये। साथ ही आप ने अल्लाह तआला का धन्यवाद किया। कहने लगे: "ऐ अल्लाह ! तेरा लाख–लाख उपकार है कि तूने एक ओर मुझे इतना बड़ा राज्य दिया और दूसरी ओर ऐसा ज्ञान प्रदान किया कि मैं पशुओं की बोलियाँ भी समझ लेता हूँ। यह तेरी बहुत बड़ी कृपा है।

ऐ अल्लाह ! तू मुझे इतनी क्षमता दे कि मैं तेरा आज्ञाकारी भक्त बन सकूँ। तेरी नेमतों का आदर कर सकूँ और ठीक–ठीक धन्यवाद कर सकूँ। ऐ मालिक ! तू ने मेरी माँ पर कृपा की और

मेरे पिता पर भी अपनी दया की वह बड़े राज्य के मालिक और तेरे नबी थे। ऐ अल्लाह तू मुझ में इतनी क्षमता दे कि मैं ऐसे काम करूँ जिनसे तू प्रसन्न हो जाए। ऐ मालिक ! तू मुझ पर अपनी कृपा कर और मुझे अपने नेक बंदो में गिन।

बात तो छोटी–सी–थी, परन्तु तुम ने देखा, हज़रत सुलैमान (अलै0) पर इसका कितना प्रभाव पड़ा। चींटी की बात सुन कर आपको अल्लाह तआला की वह सब नेमतें याद आ गयीं जो अल्लाह ने आप पर की थीं। नेमतों के याद आने के बाद आपने अल्लाह का धन्यवाद किया नेक काम करने की इच्छा की और अल्लाह से प्रार्थना की कि आप अल्लाह के शिष्ट भक्तों में सम्मिलित हो जाएँ। हमें भी चाहिए कि हर पल अल्लाह की नेमतों का धन्यवाद करें। अल्लाह से नेक काम करने की शक्ति माँगें। और यह प्रार्थना करते रहें कि "अल्लाह ! तू हम को अपने नेक बंदो में सम्मिलित करना ।"

हज़रत सुलैमान (अलै0) अल्लाह के नबी भी थे और अपने देश के राजा भी थे। राजा का शब्द सुनकर तुम यही सोचोगे कि जैसे अब से पहले बहुत से राजा हुआ करते थे। उसी प्रकार के राजा हज़रत सुलैमान (अलै0) भी होंगे। यह बात नही है, इस्लाम में राज्य नहीं होता। राजा तो समझता है कि मैं अपने देश का मालिक हूँ। यहाँ मेरा आदेश चलेगा और जब एक राजा देखता है कि उसके पास शक्ति और सेना बहुत अधिक है, और दूसरे राजा के पास कम। तो वह उसपर चढ़ाई कर देता है। उसका देश छीन कर अपने देश में मिला लेता है। इसी प्रकार

वह अपने राज्य में विस्तार करता हैं फिर राजा समझता है कि मुझे यह अधिकार भी है कि मैं अपने बाद जिसे चाहूँ अपनी गद्दी पर बिठा दूँ। प्राय: राजा के बाद उसका पुत्र गद्दी पर बैठता है।

इस्लाम के अनुसार यह सब बातें अनुचित हैं। इस्लामी शिक्षा के अनुसार सारी पृथ्वी का मालिक केवल अल्लाह है। उसी का यह अधिकार है कि इस पृथ्वी पर अपना नियम लागू करे। देश का प्रबन्ध चलाने के लिए इस्लाम उन सब लोगों को जो अल्लाह को अपना मालिक मान लें यह अधिकार देता है कि वह अपने में सब से अच्छा आदमी चुन लें और उसे अपना सरदार बना लें, यह व्यक्ति उत्तराधिकारी कहलाता है। यह लोगों पर अपना नियम नहीं चलाता बल्कि यह उस शासन का आज्ञाकार बनाता है और स्वंय भी बनता है जो अल्लाह अपने रसूलों द्वारा भेजता है। अल्लाह तआला के नबी सब मनुष्य से उत्तम मनुष्य होते हैं। अल्लाह के नबी मुसलमानों के उत्तराधिकारी भी होते थे। हज़रत सुलैमान (अलै0) भी अल्लाह के नबी और मुसलमानों के उत्तराधिकारी थे, वह अल्लाह के बनाए हुए नियम पर सवंय चलते और लोगों को चलाते थे।

अल्लाह के निकट पृथ्वी पर राज्य करने और प्रबन्ध करने का अधिकार न तो किसी परिवार और जाति को है, और न देश के साधारण नागरिक को है जैसा कि आज कल समझा जाता है। अल्लाह के निकट यह अधिकार केवल उन नेक लोगों का है जो अल्लाह को अपना मालिक मानें, उसके भेजे हुए रसूलों पर ईमान लाएँ और उसके बनाए हुए नियम पर चलकर जीवन

व्यतीत करें ।

ख़ुदा को मानना या न मानना उसके आदेशों पर चलना या न चलना हर व्यक्ति का अपना काम है। यदि कोई ऐसा मूर्ख हो जाए कि खुदा को न माने और उसकी इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत न करना चाहे तो वह अपनी ही हानि करेगा। उसका यह जीवन भी नष्ट हो जाएगा और आख़िरत में तो उसके लिए सिवाय अज़ाब के और कुछ न होगा। ऐसे लोगों को केवल समझाया जा सकता है। इस्लाम किसी को बलपूर्वक मुसलमान नहीं बनाता परन्तु इस्लाम इसकी अनुमति नहीं देता कि खुदा का ऐसा बंदा जो स्वंय आज्ञाकार न हो और दूसरों को भी अल्लाह का आज्ञाकार बंदा बनने से रोके दूसरों को उचित मार्ग पर चलने न दे। और अल्लाह के आदेशों की तुलना में अपनी आज्ञा चलाए।

अल्लाह के नबी संसार में इसी लिए आए हैं कि वे लोगों को उचित मार्ग दर्शाएँ। अल्लाह की इच्छा अल्लाह के भक्तों को बताएँ और उन्हें मनुष्य की दासता से निकाल कर अल्लाह का दास बनाएँ। इस काम को करने के लिए अल्लाह के नबी लोगों को समझाते हैं। उन्हें प्रेम के साथ सीधे रास्ते पर बुलाते हैं। जो लोग उनका कहा मान लेते हैं उन्हीं को मुस्लिम कहते हैं। जो उनका कहा नहीं मानते और खुदा के सिवाय दूसरों की पूजा और वंदना करते रहते हैं वह काफ़िर कहलातें हैं।

अल्लाह के नबी किसी को बलपूर्वक मुसलमान नहीं बनाते और तुम जानो कहीं शक्ति के बल पर भी किसी को मुसलमान बनाया जा सकता है ? जब तक कोई व्यक्ति मन से

अल्लाह और उसके भेजे हुए रसूल को न माने वह भला कैसे मुस्लिम हो सकता है। और बलपूर्वक किसी के मन को ठीक नहीं किया जा सकता यह तो मनुष्य का अपना काम है कि वह जिस मार्ग को उचित समझे उसी पर चले।

लेकिन अल्लाह के नबी इस बात की आज्ञा नहीं देते कि कुछ लोग दूसरे लोगों पर अपनी आज्ञा चलाएँ उन पर शासन करें। उन्हें अल्लाह की वंदना करने से रोकें। और उन्हें सीधे रास्ते पर न आने दें। ऐसे लोगों से अल्लाह के नबी युद्ध करते हैं और जितनी शक्ति उनके पास होती है उस शक्ति से वह ऐसे सभी लोगों को दबा कर रखते हैं।

हज़रत सुलैमान (अलै0) को अल्लाह ने बहुत अधिक शक्ति दे रखी थी। वह इस शक्ति से काम लेकर अल्लाह की आज्ञा पर न चलने वालों का बल तोड़ते थे। उनके राज्य के आसपास किसी काफ़िर को सिर उठाने का साहस नहीं था।

एक बार हज़रत सुलैमान (अलै0) ने अपनी सेना की समिक्षा की। सेना में मनुष्यों के अतिरिक्त जिन्न और चिड़ियाँ भी थीं आप की दृष्टि पड़ी तो देखा, हुदहुद ग़ायब है। पूछा, "हुदहुद कहाँ गया ? बिना अनुमति के वह कैसे ग़ायब हो गया ? आए तो मेरे सामने लाया जाय। उसको इस अनुपसिथति का कड़ा दण्ड दिया जाएगा या उसे ज़बह (गला काटकर प्राण लेना की क्रिया) कर डाला जाएगा, नहीं तो इस प्रकार ग़ायब होने का कोई उचित कारण प्रस्तुत करे।"

थोड़ी देर बाद हुदहुद आ गया। हज़रत सुलैमान के सामने लाया गया। जब पूछा गया कि कहाँ ग़ायब हो गया था ? तो बोला, "हज़रत मैं ऐसा समाचार लाया हूँ जो इससे पहले आप को मालूम ही न था – मैं उड़ते –उड़ते एक ऐसे देश पहुँच गया जिसे 'सबा' का देश कहते हैं । इस देश का शासन एक स्त्री के हाथ में है। वही वहाँ की मलिका (महारानी) है। उसके पास सब कुछ है, बड़ा धन और बहुत सा सामान, और उसका तख़्त (गद्दी) तो विशाल है अत्यन्त मूल्यवान और बहुत बड़ा – परन्तु इस धन –दौलत के होते हुए वह लोग खुदा को भूले हुए हैं। सूर्य की पूजा करते हैं। मलिका भी सूर्य को पूजती है। और उसकी क़ौम के लोग भी यह लोग और भी भिन्न–भिन्न प्रकार की बुराइयों में फंसे हुए हैं। शैतान ने उनको कुछ ऐसा बहका दिया है कि वह उन बुरे कामों को ही भला समझते हैं। और अपनी भटकी हुई हालत में भी लीन हैं । शैतान ने उनको अल्लाह का आज्ञाकारी बन्दा बनने से वंचित कर रखा है। वह लोग अल्लाह की इच्छा के विरूद्ध काम करते हैं और इसी में प्रसन्न हैं। किसी को नेकी और भलाई के मार्ग पर चलने की चिंता नहीं। कोई उनमें ऐसा नहीं जो उन्हें अल्लाह की बंदगी का मार्ग दिखाए और उन्हें बताए कि पूजा और सज्दे के योग्य सूर्य नहीं है बन्दगी उसकी होना चाहिए जो आकाश से वह वर्षा करता है जो हमारी आँखों से छुपी हुई है और पृथ्वी से वह सब्ज़ा उगाता है जिसे हम उसके उगने से पहले देख नहीं सकते। फिर वह मालिक ऐसा है जो सब कुछ जानता है। जो कुछ हम छुपाते हैं उसे भी वह जानता है सच तो यह है कि वह लोग यह बात भूले हुए हैं कि पूजा

और बंदगी के योग्य केवल अल्लाह है, शेष यहाँ जो कुछ है वह सब अल्लाह के जन्म दिए हुए प्राणी हैं, वही इस संसार का अकेला मालिक है।

हुदहुद की यह बातें सुनकर हज़रत सुलैमान (अलै0) ने फ़रमाया :–

"अच्छा हम यह जाँचना चाहतें हैं कि तू जो समाचार लाया है वह सच्चा है या झूठा। हम तुझे अपना एक पत्र देते हैं तु इस पत्र को ले जा और मलिका के पास पहुँचा दे, देखें वह क्या उत्तर देती है।"

"हज़रत सुलैमान (अलै0) को जब यह मालूम हुआ कि उनके राज्य के निकट ही 'सबा' के देश में अल्लाह के बंदे सूर्य की पूजा कर रहे है, उनकी मलिका भी सूर्य को पूजती है और सारी क़ौम अल्लाह को भूली हुई है तो उन्हें बड़ी चिंता हुई।

हज़रत ने निर्णय किया कि अल्लाह के इन बन्दों को अल्लाह की बन्दगी का सीधा रास्ता दिखाना चाहिए, और फिर नबी तो आता ही इसलिए है कि वह अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की बन्दगी का रास्ता दिखाए। उन्हें कुफ्र (अल्लाह पर ईमान न लाना) और शिर्क (अल्लाह की जात में किसी और को सम्मिलित करने) से बचाए। इस लिए इस समाचार के सुनने के बाद हज़रत सुलैमान (अलै0) का कर्त्तव्य था कि वह इस क़ौम तक अल्लाह के दीन की बात पहुँचाएं। इसी लिए आप ने यह निश्चिय किया कि सब से पहले उस देश की मलिका (महारानी) को दीन का

संदेश पहुँचाना चाहिए। यदि उसकी समझ में यह बात आ गई और उसने कुफ़्र और शिर्क से तौबा करके इस्लाम का तरीक़ा अपना लिया तो फिर पूरी क़ौम बहुत आसानी से बात को समझ लेगी और सूर्य की पूजा छोड़कर अल्लाह की बन्दगी अपना लेगी । यही सब बातें सोचकर हज़रत सुलैमान (अलै0)ने 'सबा' की मलिका के नाम एक पत्र लिखा :–

"यह पत्र सुलैमान (अलै0) की ओर से है।

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपालू और दया करने वाला है।

असल दीन अल्लाह की आज्ञा का पालन करना है। मनुष्य, सूर्य, चंद्रमा और ऐसे ही अन्य जीव की पूजा करने के लिए नहीं जन्मा है। मनुष्य को चाहिए कि वह केवल एक खुदा की बंदगी करे और केवल उसी का बन्दा बन कर रहे। यही हमारा संदेश है। इस संदेश को सुन कर तुम मेरे विरोध में सिर उठाने की कोशिश न करना। बल्कि तुम्हारे लिए शांति और सुरक्षा का मार्ग यह है कि तुम इस्लाम को क़बूल (स्वीकार) कर लो अल्लाह को अपना मालिक और स्वामी जानो, उसीकी बंदगी और आज्ञा पालन करो, पूजा के योग्य केवल वह एक जाति है, जिसने मनुष्य को जन्म दिया है। यदि तुम मेरी यह बात मान लो तो मेरे पास मुसलमान होकर चली आओ।"

हुदहुद ने यह पत्र ले जाकर 'सबा' की मलिका के पास डाल दिया। उसने पत्र पढ़ा। पत्र पढ़ कर उसके मन पर बहुत

प्रभाव पड़ा। उसने अपने मंत्रियो और सरदारों को बुलाया और उन्हें पत्र पढ़ कर सुनाया और कहा कि इस मामले में तुम्हारी परामर्श की आवश्यकता है। मैं कोई काम तुम लोगों की राय के बिना नहीं करती हूँ अब बताओ कि इस बारे में तुम लोगों की क्या राय है ?"

सरदार पत्र सुनकर अकड़ गए। बोले, "दबने और डरने की कोई बात नहीं है। हमारे पास बड़ी शक्ति है, लड़ने में हम किसी को पीठ दिखाने वाले नहीं। आप के आज्ञा की देर है, हम सब अपनी जानें लड़ा देंगे, सुलैमान (अलै0) और उनकी सेना से अच्छी प्रकार से निमट लेंगे। हम तो केवल आप के इशारे की प्रतीक्षा में है। आदेश पाते ही युद्ध के लिए तैयार हो जाएँगे।"

मलिका ने अपने सरदारों की बातें सुनीं। मलिका ठंडे दिमाग की एक बुद्धिमान स्त्री थी। बोली, "यह तो सच है परन्तु जब कोई राजा दूसरे देश पर चढ़ाई करता है तो प्रायः होता यह है कि देश के सभी लोग पिस जाते हैं। बिना कारण मारे जाते हैं। खेती और बाग़ों का नाश होता है। आदरणीय लोग अपमानित किये जाते हैं। और अच्छे-अच्छे लोगों की दुर्दशा बन जाती है अतः पहले ही चरण पर तो युद्ध की बात उचित नहीं मालूम होती।

मेरी राय यह है कि मैं पहले सुलैमान (अलै0) के पास कुछ बहुमूल्य उपहार भेजूँ और देखूँ कि वह सांसारिक राजाओं के समान कोई लोभी राजा है या सचमुच अल्लाह के रसूल हैं फिर जो लोग उपकार लेकर जाएँगे वह तनिक अपनी आँखों से

स्वयं देख भी आएँगे कि यह श्रीमान स्वंय कैसे हैं, उनके पास कितनी सेना है, उनके बारे में जब तक ठीक–ठीक बात मालूम न होजाए, एक दम युद्ध का नाम लेना ठीक नहीं, पूरी परिस्थिति मालूम होने के पश्चात् जैसे उचित होगा वैसा ही किया जाएगा।"

मलिका की बात बड़ी उचित थी सरदार यह सुनकर चुप हो गए और यह निश्चिय हो गया कि पहले हज़रत सुलैमान(अलै0) के पास कुछ लोग बहुमूल्य उपहार लेकर जाएँ।

बहुत से बहुमूल्य उपहार तैयार किए गए। कहते हैं–उनमें सोने–चाँदी के अतिरिक्त घोड़े और दास भी थे जब मलिका के भेजे हुए लोग़ हज़रत सुलैमान (अलै0) के पास उपहार लेकर पहुँचे तो हज़रत ने उस धन – दौलत को देख कर फ़रमाया कि मुझे इन वस्तुओं की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है अल्लाह ने मुझे जो कुछ दे रखा है वह उससे कहीं अधिक है। तुम भला धन–दौलत दे कर मेरी क्या सहायता कर सकते हो, मेरे पास अल्लाह का दिया हुआ बहुत कुछ है। तुम अपने उपहार को अपने पास रखो और प्रसन्न रहो। मुझे इनकी आवश्यकता नहीं। मेरा संदेश तो कुछ और ही था। विचार इस पर होना चाहिए मनुष्य होकर खुदा के सिवाय किसी और की बंदगी करना बिल्कुल अनुचित है। मैं अल्लाह का रसूल हूँ इसीलिए भेजा गया हूँ कि अल्लाह के बन्दो को अल्लाह की बन्दगी का रास्ता दिखाऊँ। इसके अतिरिक्त मेरी और कोई इच्छा नहीं है। तुम लोग अपनी मलिका के पास वापस जाओ और उससे कह दो कि मुझे तुम्हारे धन–दौलत की आवश्यकता नही। मैं इस बात को सहन नहीं

कर सकता कि तुम स्वयं भी अल्लाह की बंदगी से बेख़बर रहो। और दूसरे लोगों को भी अनुचित मार्ग पर चलाती रहो। मनुष्यों को मनुष्य की दास्ता से निकालना और उन्हें सीधा रास्ता दिखाना मेरा कर्त्तव्य है तुम अपनी मलिका से कह दो कि यदि वह अल्लाह के आज्ञाकारी बनने के लिए तैयार नहीं तो फिर हम अपनी सेना लेकर आते हैं। इस सेना का मुक़ाबला फिर उनसे न हो सकेगा। हम उनको अपमानित करेंगे जो अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं करते। और फिर उन्हें बस्तियों से निकाल बाहर करेंगे। हमारा काम लोगों को अल्लाह के दीन का रास्ता दिखाना है, धन–दौलत जमा करना हमारा काम नहीं है।

जब मलिका के भेजे हुए लोग मलिका के पास वापस पहुँचे तो उन्होंने हज़रत सुलैमान की सब बातें उसे सुनायीं। यह बातें सुनकर मलिका को विश्वास हो गया कि सुलैमान कोई सांसारिक राजा नहीं है बल्कि हो सकता है कि वह अल्लाह के रसूल ही हों। उसने निश्चय किया कि वह स्वंय चलकर हज़रत सुलैमान से भेंट करे और यदि उसको पूरा विश्वास हो जाए तो फिर इस्लाम क़बूल करले।

इधर तो 'सबा' की मलिका हज़रत सुलैमान (अलै0) के दरबार में जाने के लिए रवाना हुई, उधर अल्लाह–तआला ने वही (वह जानकारी जो अल्लाह तआला फ़रिश्तों के द्वारा अपने नबियों तक पहुँचाता है।) के द्वारा हज़रत सुलैमान (अलै0) को यह बात बता दी। हज़रत ने चाहा कि मलिका के आने पर उसके सामने कोई ऐसी अनोखी बात प्रस्तुत कर दी जाए जिसे देखकर

उसे पूरा–पूरा विश्वास हो जाए कि सचमुच मैं अल्लाह का रसूल ही हूँ। ऐसी अनोखी बातों को चम्तकार कहते हैं।

हज़रत सुलैमान (अलै0) को मालूम था कि मलिका के बैठने का तख़्त बहुत क़ीमती और शानदार है। आपने चाहा कि किसी प्रकार वही तख़्त मलिका के आने से पहले–पहले यहाँ आ जाए। हज़रत (अलै0) ने अपने दरबारियों को इकट्ठा किया और कहा, " मैं चहता हूँ के सबा की मलिका का तख़्त उसके पहुँचने से पहले यहाँ आ जाए। बताओ तुम में से कौन इस काम को कर सकता है ?"

यह सुनकर हज़रत के दरबारियों में से एक जिन्न बोला, "मैं यह काम कर सकता हूँ और आप के दरबार से जाने से पहले मैं इस तख़्त को लाकर आपकी सेवा में प्रस्तुत कर दूँगा। मेरे अंदर इस काम के करने की शक्ति भी है और मैं अमानतदार भी (धरोही) हूँ। उस तख़्त में से कोई बहुमूल्य वस्तु इधर–से उधर ने होने पाएगी।"

इतने में हज़रत सुलैमान अलै0 के एक सहाबी (नबी की संगत में बैठने वाला) जो अल्लाह के शिष्ट भक्त थे, और हज़रत सुलैमान (अलै0) के विशेष व्यक्ति थे, बोले,

"हज़रत ! यह तख़्त तो बस इतनी देर में यहाँ आ सकता है जितनी देर में पलक झपकती है।"

इतना कहना था कि तख़्त दरबार में आकर रख गया। हज़रत सुलैमान (अलै0) ने तख़्त दरबार में उपस्थित पाया तो अत्यन्त प्रसन्न हुए, कहा :–

"यह मेरे मालिक की कृपा है कि उसकी माया शक्ति से तख़्त पल भर में 'सबा' से उठकर मेरे दरबार में आ गया। मनुष्य में यह शक्ति कहाँ कि वह कुछ कर सके। यह सारा चमत्कार अल्लाह ही की कृपा है। मेरे ऊपर इस प्रकार कृपा करके अल्लाह तआला मेरी परीक्षा ले रहा है कि देखें सुलैमान (अलै0) मेरा उपकार मानता है या नशुकी करता है। यदि मैं समझ लूँ कि यह सारे काम मेरी शक्ति से हो रहे हैं तो मुझसे बड़ा नाशुक्रा (जो धन्यवाद न करे) कौन ? वास्तविक शक्ति अल्लाह की है। यह सब उसी की कृपा है, वही जो चाहता है करता है।"

फिर हज़रत ने फ़रमाया कि "जो बन्दा अल्लाह का धन्यवाद करता है वह अपना ही भला करता है। अल्लाह को कोई लाभ नहीं पहुँचाता। शुक्र करने वाले बंदे पर अल्लाह तआला और अधिक कृपा करता है – और जो कोई धन्यवाद नहीं करता तो अपना ही कुछ बिगाड़ता है। धन्यवाद करके अल्लाह को कोई हानि नही पहुँचाता। अल्लाह तआला को बंदो के शुक्र या नाशुक्री की कोई आवश्यकता नहीं। उसे किसी को सहायता या प्रशंसा की कोई आवश्यकता नहीं। वह तो स्वंय बड़ा कृपालु और दया करने वाला है।"

तुमने देखा मोमिन का उदाहरण ? जब उससे कोई बड़े–से–बड़ा काम भी हो जाता है तो वह कभी अपनी बड़ाई नहीं करता। वह सदैव अल्लाह की बड़ाई करता है कि वास्तविक शक्ति तो अल्लाह के पास है जो कुछ होता है उसकी आज्ञा से होता है।

परन्तु जो व्यक्ति अल्लाह को भूला हुआ होता है यदि उसके हाथों से कोई काम हो जाता है तो वह जगह–जगह अपनी बड़ाई करता फिरता है। और यह समझता है कि यह काम मैंने अपनी बुद्धि और शक्ति से कर लिए और यह सब कुछ मेरी बुद्धि और परिश्रम का परिणाम है।

यही अन्तर है एक मुसलमान और काफ़िर में। मुसलमान अल्लाह का धन्य होता है और काफ़िर का कोई सहारा नहीं होता।

जब 'सबा' की मलिका का तख़्त हज़रत सुलैमान (अलै0) के सामने आकर रखा गया तो हज़रत ने फ़रमाया :–

"इसमें कुछ साधारण सा परिवर्तन लाओ और इसका रूप थोड़ा–सा–बादल दो, देखें मलिका अपने तख़्त को पहचान पाती है या नहीं।"

एक दिन समाचार देने वाले ने समाचार दिया कि सबा की मलिका आ गई। हज़रत सुलैमान (अलै0) ने उसे दरबार में बुलाया। सब से पहले उसी तख़्त पर नज़र (दृष्टि) पड़ी। मलिका उसे देखने लगी। हज़रत सुलैमान (अलै0) ने मलिका से पूछा – क्या तुम्हारा तख़्त भी ऐसा ही है ?" मलिका बोली :–

"यह तो ऐसा मालूम होता है जैसे वही तख़्त हो।"

जब मलिका ने अपना तख़्त पहचान लिया तो हज़रत सुलैमान (अलै0) ने उसे सारी कहानी सुनाई। और फ़रमाया कि

किस प्रकार अल्लाह की शक्ति से यह तख़्त पल के पल में 'सबा' से उठकर यहाँ आ गया।

यह सुनकर मलिका बोली कि मेरे संतोष के लिए तो इस चमत्कार की आवश्यकता भी न थी। आप के बारे में हम लोगों को पहले ही मालूम हो चुका था कि आप कोई संसारिक राजा नहीं हैं और इसी से हम आप के आज्ञाकारी बनने के लिए तैयार हो गए। परन्तु हमारी क़ौम जो बहुत दिनों से अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों की पूजा करती रही है उसके विचार को एकदम ठीक कर देना इतना सरल नहीं था और यही एक बड़ी बाधा थी।

हज़रत सुलैमान(अलै0) ने मलिका की इन बातों का कोई उत्तर नहीं दिया। बल्कि कहा कि अच्छा चलो, हमारे महल में चल कर बैठो हजरत का महल अत्यन्त विशाल और सुन्दर बना हुआ था। महल का फ़र्श (पक्की ज़मीन) साफ आईने की तरह से चमकता हुआ था। मलिका जब सेहन (आँगन) में पहुँची तो समझी सामने गहरा पानी है। वह घबराई कि अब आगे कैसे बढ़े, यह देखकर हज़रत सुलैमान (अलै0) ने फरमाया :–

"नहीं घबराने की आवश्यकता नहीं, चली आओ यह तो बिल्लौर (स्वच्छ सफेद पारदर्शक पत्थर) का फ़र्श है।"

इस ठाठ–बाट का महल देखकर मलिका चकित रह गई। उसने देखा कि एक ओर तो हज़रत सुलैमान (अलै0) के पास संसारिक वस्तुओं का एक ढ़ेर है ऐसे ऐसे महल हैं जिनकी सजावट की कोई सीमा नहीं दूसरी ओर वह स्वंय बेहद सादा

स्वभाव, अल्लाह वाले और अच्छे तौर–तरीक़े के व्यक्ति हैं। यदि हज़रत की जगह पर कोई दूसरा व्यक्ति होता तो इतना विलास और इतना धन पाकर आपे से बाहर हो गया होता। घमंड के मारे किसी का आदर न करता। अतः मलिका ने भली भांति समझ लिया कि हज़रत सुलैमान कोई संसारिक राजा नहीं हैं बल्कि सचमुच अल्लाह के रसूल हैं।

जब यह बात उसकी समझ में आ गई तो अब उसने हज़रत सुलैमान (अलै0) के सामने अपने इस्लाम क़बूल करने की घोषणा की और कहा :–

"ऐ मेरे मालिक ! मैने अपने उपर बड़ा अत्याचार किया है कि तुझे भूल कर सूर्य की पूजा करती रही, और तेरे सिवाय दूसरों के आगे सिर झुकाती रही। अब मै हज़रत सुलैमान (अलै0) के साथ तेरा आज्ञाकारी बनना स्वीकार करती हूँ और प्रतीक्षा करती हूँ कि तू ही सारे संसार का मालिक है तू ही सब का पालने वाला है और तेरे सिवाय कोई ऐसा नहीं जिसकी आज्ञा का पालन या जिसकी वंदना की जाए।"

सबा की मलिका मुसलमान हो गई और हज़रत सुलैमान (अलै0) ने उसे जिस उद्देश्य के लिए पत्र लिखा था पूरा हो गया।

जब हज़रत सुलैमान (अलै0) की मृत्यु का समय आ पहुँचा तो उस समय जिन्न आपके आदेश पर कोई बड़ा भवन बना रहे थे।

हज़रत को अपनी मृत्यु का ज्ञान पहले से हो गया था।

आप जानते थे कि जिन्न इस भवन का काम उस समय तक करते रहेंगे, जब तक उन्हें यह मालूम है कि मैं जीवित हूँ परन्तु जैसे ही उन्हें यह मालूम होगा कि मेरी मृत्यु हो गई तो वह काम छोड़ कर बैठ रहेंगे। हज़रत सुलैमान (अलै0) चाहते थे कि भवन का काम पूरा हो जाए। परन्तु अल्लाह तआला ने जिस बन्दे की मृत्यु का जो समय निश्चित कर रखा है उसमें न तो एक सेकेण्ड की कमी हो सकती है और न ज्यादती। इसलिए हज़रत ने ऐसा प्रबंध किया कि जिन्नों को आपकी मृत्यु का समाचार मिल ही न पाए और वह यही समझते रहें कि आप जीवित हैं।

हज़रत सुलैमान (अलै0) मृत्यु से पहले अपनी लाठी का सहारा लेकर खड़े हो गए और इसी अवस्था में आपकी आत्मा निकल गई। जिन्न आपके शरीर को देखकर यही समझते रहे कि हज़रत लाठी का सहारा लिए खड़े हैं। और वह बराबर काम में लगे रहे। यहाँ तक कि भवन का काम ख़त्म हो गया। इतने दिनों में लाठी में नीचे से दीमक लग गई और हज़रत सुलैमान (अलै0) का जो शरीर लाठी के सहारे खड़ा था गिर पड़ा। अब जिन्नों को पता चला कि हज़रत सुलैमान (अलै0) की मृत्यु हो गई है। इस प्रकार एक ओर तो भवन का जो काम शेष रह गया था वह पूरा हो गया। दूसरी ओर एक बड़ा लाभ यह हुआ कि ग़ैब का ज्ञान सिवाय खुदा के किसी को नहीं है। यदि उन्हें ग़ैब का ज्ञान होता तो वह हज़रत सुलैमान (अलै0) की मृत्यु से इस प्रकार अज्ञान न रहते। और भवन को पूरा करने का कष्ट न झेलते रहते।

कुछ लोग यह समझते हैं कि जिन्न और शैतान ग़ैब की बातें जानते हैं उनको यह घटना सुनाकर समझाया गया है कि ग़ैब की बातें अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता कल क्या होगा, यह ज्ञान केवल अल्लाह को है। इसी प्रकार जो लोग ज्योतिषियाँ, हाथ देखने वालों, पंडितों और इसी प्रकार के दूसरे लोगों की बताई हुई बातों को सच्चा जानतें हैं वह बड़ी भूल करते हैं। ग़ैब का ज्ञान केवल अल्लाह को है, इस प्रकार के सब लोग अटकल के तीर चलाते हैं। उनकी कही हुई बातों को सच जानना ठीक नहीं।

याद रखने की बातें

1. धनवान होना बुरा नहीं, धनवान होकर धन को अपने सुख चैन में उड़ाना बुरा है।
2. धन भी अल्लाह तआला की एक नेमत हैं। शर्त यह है कि मनुष्य इस नेमत को पाकर अल्लाह को न भूले। निर्धनों और असहाय लोगों के काम आए और अल्लाह का दिया हुआ धन इस प्रकार ख़र्च करे जिस प्रकार अल्लाह की इच्छा हो।
3. मोमिन की दृष्टि में धन–दौलत का वास्तविक महत्व यह है कि वह उसे अल्लाह के दीन को ऊँचा उठाने और असहाय व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरी करने में ख़र्च करे।
4. हर नेमत पर शुक्र अदा करना मोमिन की पहचान है वह अपनी किसी अच्छाई को व्यक्तिगत अच्छाई नहीं समझता बल्कि वह उसे अल्लाह की देन समझ कर उसका धन्यवाद करता है।

5. मोमिन को इस बात का विश्वास होता है कि शुक्र अदा करने से ही अल्लाह तआला की नेमतों में वृद्धि होती है और आख़िरत के जीवन में सदैव रहने वाला सुख तो उन्हीं को मिलेगा जो अपने मालिक के शकगुज़ार बन्दे होगें। नेमतें पाकर अल्लाह को भूल जाना मोमिन का काम नहीं।

6. अल्लाह की सभी नेमतें वास्तव में उसके आज्ञाकारी भक्तों ही के लिए हैं। संसार में भी और आख़िरत में भी। परन्तु संसार में मनुष्य को जो नेमतें मिली हैं उसमें उसकी परीक्षा भी होती है इसलिए यह नेमतें यहाँ मोमिन और काफ़िर सबको मिलती हैं। यह अवश्य है कि आख़िरत में अल्लाह की नेमतें विशेष रूप से अल्लाह के इन्हीं आज्ञाकारी भक्तों के लिए होंगी।

7. ईमान और इस्लाम बलपूर्वक किसी के मन में नहीं उतारा जा सकता। यदि यह काम बलपूर्वक किया जा सकता तो अल्लाह तआला स्वंय अपनी शक्ति से हर एक के मन में ईमान और इस्लाम डाल देता और किसी में इतना साहस न होता कि वह अल्लाह की आज्ञा को टाल देता। परन्तु मनुष्य को अल्लाह तआला ने यह अधिकार दिया है कि वह चाहे तो ईमान लाए और चाहे तो उसकी आज्ञा न माने। अल्लाह के दीन पर दूसरों को लाने के लिए किसी प्रकार का बल नहीं दिखाया जा सकता।

8. मोमिन अल्लाह के मार्ग में शक्ति का प्रयोग भी करता है परन्तु यह केवल उस समय जब कुफ्र की शक्ति दीन का

रास्ता रोके और प्रचार द्वारा लोगों तक उचित बात पहुँचाना संभव न रहे। इस पकार शक्ति के प्रयोग के लिए भी आवश्यक शर्तें हैं, हर व्यक्ति का यह काम नहीं।

9. ग़ैब की बातें अल्लाह के सिवाए किसी को नहीं मालूम। बड़े–से–बड़ा नबी भी इस बारे में असहाय है। हज़रत सुलैमान (अलै0) को अल्लाह तआला ने अपने सभी जीवों पर अधिकार व प्रभुत्व दिया था। परन्तु उन्हें भी ग़ैब की बातें उस समय तक मालूम नहीं हो सकती थीं जब तक अल्लाह तआला ही उनका ज्ञान न दे। हुदहुद नज़र नहीं आया तो आप यह पूछते ही रहे कि हुदहुद कहाँ गया।

10. मोमिन अपने किसी कमाल को चाहे वह कैसा ही बड़े–से–बड़ा कमाल क्यों न हो अपना व्यक्तिगत कमाल नहीं समझता। वह उसे अपने मालिक की कृपा ही कहता है। इसके विपरीत अल्लाह का विद्रोह अपनी हर सफलता पर डींगे मारता और यही कहता है कि मैंने यह किया, मैं ने यह किया। अपनी बुद्धि और अपनी शक्ति ही को सब कुछ समझता है और उसे जो कुछ मिलता है वह उसे अपनी सूझ–बूझ और अपने परिश्रम का परिणाम जानता है।

11. ग़ैब का ज्ञान जिस प्रकार मनुष्य को नहीं है। इसी प्रकार जिन्न और शैतान को भी ग़ैब का ज्ञान नहीं होता कल क्या होगा यह ज्ञान केवल अल्लाह को है। ज्योतिषियों, पंडीतों, फ़ाल निकालने वालों और हाथ की लकीरें देखकर भाग्य का हाल बताने वालों और ऐसे ही दूसरे सभी लोगों की बातें अटकल का तीर मात्र हैं इन बातों को सत्य जानने से ईमान को हानि पहुँचती है।